



श्रीमद्भगवद्गीता

156

ASIA ARCHIVES

156

156

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते
वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते
वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते
वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



यागु मकर्मि नमयतु गवान्
नाथयिषु स्यात्ताम ॥ मरुतावति
कृष्ण ॥ सर्वकले ॥ वाधिसत्वे १
वर्जयादिनरनामवाधिसत्वेन
म ॥ वाधिसत्वेन ॥ महासत्वेन ॥

ववाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ वर्जसुनमचनाम ॥ वाधिसत्वेन ॥ महासत्वेन ॥ गुरुगुपुनचनाम
वाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ आकासगंधे ॥ नचनामवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ साजलमतिनचनाम
वाधिसत्वेन ॥ महासत्वेन ॥ सूर्यगहे नचनामवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ अदिक्रियध्वज ॥ चरना
मवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ नतयादि ॥ नाचवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ समंनहद ॥ चरनामवाधि
सत्वेन महामहासत्वेन ॥ महासामयाय ॥ नचवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ सर्वदिद नचविष्कलीना
चवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ सर्वसुग ॥ चरवाधिसत्वेन महामहासत्वेन ॥ शेषअसन ॥ नचनामवाधि

सुखेन महासुखेन ॥ देवता किं नृप ॥ ७० ॥ नरवाधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ वज्रयातिनाचवाधिसत्त्व
धनमहासत्त्व ॥ धर्मधन ॥ दानवाधि ॥ सत्त्वमहासत्त्व ॥ विविधिवज्रलाचन ॥ नरवाधिसत्त्वमहास
त्त्व ॥ अजसहस्र ॥ नरवाधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ मेरुधनचनामवाधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ प्रदंय २
मुखेन विनिवाधिसत्त्वकाद्यसन्नियतिता ॥ अथ रवातिं गददयूरुदिकाया ॥ सन्नियतितामहं ज्वल
नालायनददयूरुबुधं गमा ॥ गक्रादवानामिडावक्रावसहा मतिचलादिश्रुवाच्यवज्रनादय ॥ प्रति
द्वंद्वयुगे ॥ सन्नियतिने सुस्मिन्मर्षदि ॥ जनकैश्च नागजसुतसहस्रे ॥ सन्नियतिने ॥ नद्यथाययलाल

नरनामनागजराजं न ॥ प्रजयुक्तं नरनागलाजं न ॥ मिमिजिन नरनागलाजं न ॥ गवा मयतिनारनाग
जराजं न ॥ गगजिषेधरनागजराजं न ॥ हल्लुह नरनागजराजं न ॥ वक्रादकं नरनागजराजं न ॥ गरुकेन
चनागजराजं न ॥ गगजिषे नरनागजराजं न ॥ गजगजिषे नरनागजराजं न ॥ नद्यायुनद्युनरनागजराजं न
वत्सीयुर्गुह्यनागजराजं न ॥ जनतयुनरनागजराजं न ॥ साजलं नरनागजराजं न ॥ नद्युमुखेन न
केनागजराजं न ॥ गगसहस्रे ॥ सन्नियतिने ॥ जनकैश्च गजध्वजं गगसहस्रे सन्नियतिने ॥ नद्यथादंदति
स्वप्रहारगजध्वजं न ॥ सनाहूस्व लं नरगजध्वजं न ॥ सहस्रं नरगजध्वजं न ॥ सदास्यति

नावगन्धर्वजाङ्गन॥अत्रिययुक्तादनयगन्धर्वजाङ्गन॥निर्वादिनहर्षावगन्धर्वजाङ्गन
अलकात्रहृषितनयगन्धर्वजाङ्गन॥कुसात्रदर्शननयगन्धर्वजाङ्गन॥सुवाहूयकनयग
न्धर्वजाङ्गन॥मृगशिर्यनयगन्धर्वजाङ्गन॥धर्मयिद्यहवगन्धर्वजाङ्गन॥प्रद्युम्नस्वेत्रनयग
न्धर्वजाङ्गन॥सन्तियमितेसुस्मिन्नाद्यदि॥जनकेअकिन्नप्रजाजगतसहसे॥सन्तियमितेसुस्मि
न्नदयषदि॥तद्यथासुस्मन्नवकिन्नजजाङ्गन॥किजितिनावकिन्नप्रजाङ्गन॥त्वाटिस्वन्नवकिन्नप्रजा
ङ्गन॥प्रहृषितेनवकिन्नप्रजाङ्गनवक्रुद्धनाव॥किन्नप्रजाङ्गनपूष्यावकिन्नहव॥किन्नजाङ्गनमहिना

वकिन्नप्रजाङ्गन॥यल्लुक्तादप्रहवकिन्नप्रजाङ्गन॥दृष्टवीर्यहवकिन्नजजाङ्गनवकिन्नजाङ्गन॥सथाधन
वकिन्नप्रजाङ्गन॥सकस्मन्नवकिन्नप्रजाङ्गन॥कुम्भहवकिन्नप्रजाङ्गन॥प्रद्युम्नस्वेत्रनयके॥किन्नप्रजाङ्ग
नसगसहसे॥सन्तियमितेःजनकेअस्मन्नजगतसहसे॥सन्तियमितेःतद्यथातिजातमातामाया
जसाःसुक्तानामायाजसा॥सुवर्द्धमस्वजातामायाजसा॥विहृषितातामायाजसा॥कर्तृधर्मा
लानामायाजसा॥जसन्तविहृतामायाजसायंकर्तृमाहिस्वरातामायाजसा॥वतिकजातामाया
जसा॥कायनमाजातामायाजसा॥यलीस्यधितकायातामायाजसा॥सन्तिहृष्टतामायाजसा॥वृज

ज क मी नो य न सा ॥ द प वा धि स र वा ना मा य न सा ॥ का ई न मा ला ना मा य न सा ॥ नि ला य ना
ना मा य न सा ॥ ध र्मा हि र वा ना मा य न सा ॥ रु कि ञ ना मा य न सा ॥ क सा ना मा य न सा ॥ सु ब्र ह्म
र वा ना मा य न सा ॥ ग नः स न्नी व ति र्गः ॥ ज न का ति च ना ग क न्या ग ता निः सा ति य ति ना ति
॥ न द्र थ ॥ वि रु ष ष ध ना मा ना ग क न्या ॥ स रि हि द्रा ना मा ना ग क न्या ॥ ति ड ता ना मा ना ग क न्या
स र्व ति स र वा ना मा ना ग क न्या ॥ इ य ग्री या ना मा ना ग क न्या ॥ वि ज य श्रि या ना मा ना ग क न्या ॥ वी यु
ल्ला च ना ना मा ना ग क न्या ॥ वि द्यु य ल ना मा ना ग क न्या ॥ सा नि जि नी ना मा ना ग क न्या ॥ ग न यु जि
वा ना ना मा ना ग क न्या ॥ म हौ ष ध ना मा ना ग क न्या ॥ वि द्यु न्द ना मा ना ग क न्या ॥ नृ क जी र्वा ना मा ना ग

क न्या ॥ स न वा ह ना मा ना ग क न्या ॥ ग स नि ना मा ना ग क न्या ॥ ज ना क त्सा ना मा ना ग क न्या ॥ स रु ष ना मा ना ग क
न्या ॥ या नु ल स द्या ना मा ना ग क न्या ॥ उ थ हि नू ञ ना मा ना ग क न्या ॥ त्या ग ग ता ना मा ना ग क न्या ॥ अ रि
त्र य रि वा ना ना मा ना ग क न्या ॥ क लि द्रा ना मा ना ग क न्या ॥ सा ग न क कि ना मा ना ग क न्या ॥ चू रु स र वा ना
मा ना ग क न्या ॥ ध र्म थि थ ना मा ना ग क न्या ॥ स र व क ना ना मा ना ग क न्या ॥ ॥ यै वि र्मा ना मा ना ग क न्या ॥
सा ग न गं मि वा ना मा ना ग क न्या ॥ म नू श्रि या ना मा ना ग क न्या ॥ नृ व यु स र वा न्य न का ति ना ग
क न्या ॥ ग ता नि स नि य ति ना ति ॥ ज न का ति च ग न्ध र्व व क न्या ॥ स ता नि स नि य ति ना ति ॥ न द्र थ ॥

प्रियसुखानामनागकन्या॥ प्रियदधानामनागकन्या॥ सुदर्शनानामनीर्गकन्या॥ गन्धर्वकन्या॥
वर्कश्रियानामगन्धर्वकन्या॥ वर्कसानामगन्धर्वकन्या॥ सुमालिनामगन्धर्वकन्या॥ ~~वर्कश्रियानामगन्धर्वकन्या॥~~
वनस्यनिनामगन्धर्वकन्या॥ सतयया नामगन्धर्वकन्या॥ कुसुमदयया नामगन्धर्वकन्या॥ सुकुनि २
नानामगन्धर्वकन्या॥ वन्नमात्रानामगन्धर्वकन्या॥ नूदितयया नामगन्धर्वकन्या॥ सुकुकिना
मगन्धर्वकन्या॥ शरुश्रियानामगन्धर्वकन्या॥ दुर्दतिनामगन्धर्वकन्या॥ सुमालानामगन्धर्व
कन्या॥ विरुयितानामगन्धर्वकन्या॥ अहिनीमानामगन्धर्वकन्या॥ धर्मकाकिनामगन्धर्व

कन्या॥ धर्मदयानामगन्धर्वकन्या॥ उरुनामगन्धर्वकन्या॥ सनाकलानामगन्धर्वकन्या॥
॥ ३ ॥ यमश्रियानामगन्धर्वकन्या॥ ययालुमनामगन्धर्वकन्या॥ यलुस्वतिनकजानामग
न्धर्वकन्या॥ विलासन्दगमिनिनामगन्धर्वकन्या॥ यथिवित्थदानामगन्धर्वकन्या॥ हलदयानाम
गन्धर्वकन्या॥ सिदगमिनिनामगन्धर्वकन्या॥ कुसुमदयया नामगन्धर्वकन्या॥ सनाजसानामगन्ध
र्वकन्या॥ दानन्दानामगन्धर्वकन्या॥ दशवरनानामगन्धर्वकन्या॥ तातिथियानामगन्धर्वकन्या॥
निकर्षीनयियानामगन्धर्वकन्या॥ सनजानिनिनामगन्धर्वकन्या॥ अस्त्राकानामगन्धर्वकन्या॥ ००

दुष्टिया नाम गन्धर्वकन्या ॥ युक्तयति निर्वाणी नाम गन्धर्वकन्या ॥ सुव्रतश्रिया नाम गन्धर्वकन्या ॥
 इव्रतश्रिवल्लाना नाम गन्धर्वकन्या ॥ यागयलिसूका नाम गन्धर्वकन्या ॥ हंखसूका नाम गन्धर्व
 कन्या ॥ मादयलीसूका नाम गन्धर्वकन्या ॥ सुव्रतयलीका नाम गन्धर्वकन्या ॥ यागयलीसूका
 नाम गन्धर्वकन्या ॥ गल्लयिअ नाम गन्धर्वकन्या ॥ जगमनागमगन्धर्वकन्या ॥ जसियुता नाम गन्धर्व
 कन्या ॥ वल्लयिमयुता नाम गन्धर्वकन्या ॥ सुव्रतयलीका नाम गन्धर्वकन्या ॥ सुव्रतयलीका नाम
 गन्धर्वकन्या ॥ उरुव्रतश्रिया नाम गन्धर्वकन्या ॥ नृदयसूका नाम गन्धर्वकन्या ॥ गतानि

मतिवतितानि ॥ तस्मिन्त्यर्थदानकातिवकिन्नकन्या ॥ गतानि सतिवतितानि ॥ तद्यथा ॥ वैश्रिया नाम
 गन्धर्वकन्या ॥ यज्ञाजवनाम गन्धर्वकन्या ॥ यलिसहितनाम गन्धर्वकन्या ॥ विलासदगमिनिनाम गन्धर्व
 कन्या ॥ विविधददानाम गन्धर्वकन्या ॥ हंखददानाम गन्धर्वकन्या ॥ सिद्धगमिनिनाम गन्धर्वकन्या
 कन्या ॥ सुदयव्या नाम गन्धर्वकन्या ॥ ॥ मनसा नाम किन्नकन्या ॥ सानसि नाम किन्नकन्या ॥ वायुगमना
 म किन्नकन्या ॥ वल्लनवगमनाम किन्नकन्या ॥ जगमना नाम किन्नकन्या ॥ वैश्रिया नाम किन्नकन्या ॥
 ललितयदाना म किन्नकन्या ॥ सुदयव्या नाम किन्नकन्या ॥ जयजस्रिया नाम किन्नकन्या ॥ ॥

कुशियानामकिन्नरकन्या ॥ कृष्णयूगानामकिन्नरकन्या ॥ सूरियानामकिन्नरकन्या ॥ जनकनरकुका
 नामकिन्नरकन्या ॥ जेवलाकिगलकिन्नानामकिन्नरकन्या ॥ कुगिलानामकिन्नरकन्या ॥ विस्मिदुललाढाना
 मकिन्नरकन्या ॥ वर्जसूक्तिनामकिन्नरकन्या ॥ कपिजानामकिन्नरकन्या ॥ जेदखनखविगानामकिन्नरकन्या ॥ सूजनय
 हिसविगानामकिन्नरकन्या ॥ सहाम्यगिनीमकिन्नरकन्या ॥ आकासजकिन्नानामकिन्नरकन्या ॥ यदुजाउ
 न्दानामकिन्नरकन्या ॥ मनिचूजनामकिन्नरकन्या ॥ मनिशचनिनामकिन्नरकन्या ॥ विदसजनयत्रिसविगा
 नामकिन्नरकन्या ॥ सगानामकिन्नरकन्या ॥ आयुद्वानामकिन्नरकन्या ॥ गथगतकोशयलियालिंगानाम

किन्नरकन्या ॥ धर्मधुयलिजकिन्नानामकिन्नरकन्या ॥ न्यूत्रार्कमानामकिन्नरकन्या ॥ नकुहमर्कमानामकी
 न्नरकन्या ॥ सगनयलिगुदधर्मकाकिन्नानामकिन्नरकन्या ॥ सदान्दर्थेनामकिन्नरकन्या ॥ सखिगन्धजतिना
 मकिन्नरकन्या ॥ सदान्कालदर्शीनामकिन्नरकन्या ॥ आश्रसनिनामकिन्नरकन्या ॥ विभाकुकनानामकिन्नर
 कन्या ॥ खगद्वालनामकिन्नरकन्या ॥ यथिवियुसक्रमनामकिन्नरकन्या ॥ सप्रयुनामकिन्नरकन्या ॥ सप्रयु
 मानामकिन्नरकन्या ॥ महिन्दानामकिन्नरकन्या ॥ उमतिकानिनामकिन्नरकन्या ॥ योगनृजगानामकिन्न
 रकन्या ॥ वक्काशुयानामकिन्नरकन्या ॥ जगयूधनामकिन्नरकन्या ॥ विरुविगालंकाजानामकिन्नरकन्या ॥ म

नाहजानाम किन्नजकन्या ॥ नृदम्यस्वेजनकानि किन्नजकन्या ॥ सगानिसनियमितानि ॥ शनकान्याभि
काजगानिजनियमितानि ॥ शनकानिव ॥ यलिनजकनिशुनजगानिजनियमितानि ॥ यदा मरा सन्निवाताहर्क
दामहानजकजग्यानिज्यजनिनिशुत्रित्वाजनवनमहाविहा लमाणकृमिस्म ॥ सर्वनविहाजम्यजिगहि
गा ॥ नृदंष्ट्रकदिवमहिजलायजिकासुमहायजिगहिगानृदंष्ट्रक ॥ कर्णजग ॥ सुदक्षयविगा ॥ द
ज्यकस्म ॥ नयनलयनसुवर्धूलयमयानिद्वानिदृष्ट्यकस्म ॥ लयनलयनसुवर्धूलयमयानि
दृष्ट्यकस्म ॥ प्रासादातिलयमय ॥ प्रासाद ॥ सुवर्धूलयमयानिस्तानि ॥ जलायविगानि ॥ सुवर्धूल

मये ॥ प्रासादलयमयानिस्तानिद्विजगानि यगविधयययजियर्धुन ॥ नद्यथा यललयनकुसुदय
द्रजिकसङ्गाजवमहासात्रा नवा ॥ उदसजयययजियर्धुन ॥ जनेव रविविधनिकाययययललयन
नद्यथा चम्रककनविजयादलानियूकानिगन्धवार्षिकसुमनानि ॥ नृगानिसनाजमानिकाययययानिग्रा
दरुगानि ॥ सत ॥ स्त्री ॥ शनवनमहाविहा ॥ लयलिसरितानि ॥ जथतस्मिन्नयवदिमधसर्वहीवनन
विस्फुमी ॥ नामवाधिसलाउलायामनादेकांजसुतयासंगकृत्वादकिन्नजानुसहूलययिग्रायितिव्याथ
यनरगवास्तना ॥ लिस्तुमहजवनमतदवाचक ॥ यजमाजवर्धुनयाप्रादहगवतकृतायसुगव

[illegible][illegible]

नयसयात्रयत्रुवा ॥ सम्यजमायुद्यते ॥ यत्र माद्विष्टाविचिन्तयासमायद्यते ॥ किमविचोमहानत्रकद्यु
रुनिमित्तुयादुत्तरे ॥ यदावलाकिमज्जवाधिसत्तामहासत्त्वयुविसति ॥ नयात्रकनचक्रयुमाद्ययद्वाहि
यादुत्तरेनानिसावेकस्मिन्वीसूटिगानस्यनेवाज्जिखदायामध्ययुक्तेननिययादुत्तरे ॥ अथनयसयात्रयत्रु १०
वात्रसिमुखलशित्तियात्रनोमत्रज ॥ दावक्रानिभुत्रादयायुद्धेयनयमात्रात्रागनायसक्रमोनदवा
रग ॥ यत्र ॥ दल ॥ जानिया ॥ वासास्यकंकर्मरुमिः ॥ यलिरवीक्ष ॥ उरु ॥ जात्रात्रमवाव ॥ किंकलनय
व्याकंकर्मरुमि ॥ यत्रिखि ॥ नयसयात्रयदुत्तरे ॥ उवाव ॥ मल्लदवात्रानियायथमनस्सीनविजो

महानकद्युत्तरेनिमित्तुयादुत्तरे ॥ गानितायंडवजतंकामनूपीयदुत्तरे ॥ यद्विष्टः ॥ नामकनधजादिया
लकात्ररुविनजलिजायुजत्रमेरुमानससर्वविष्टमित्तु ॥ दुस्मान ॥ सवगादिजयत्रुयसु ॥ विष्टनस्यवयु
विष्टमादा ॥ यदासयुविष्टसुदाजकनचक्रयुमानानियद्वा निदुत्तरेनानि ॥ सावदकुलीविष्टदिगानिसावा
जिखदायामध्ययुक्तेननिययादुत्तरेनानि ॥ अथउर्मत्रात्राचिनामायद ॥ कस्यदेवस्याययुत्तरे ॥ अथवाम
दुज्जत्रस्यमल्लदिकस्यनामयनस्यय ॥ कमहासमृत्तनमल्लनसदवयु ॥ सुस्यवजयदाननरुत्तरेमि
मन्याया ॥ अथवात्राकसउत्तरेनजावनमहावल्यत्राक्रमनदसमृत्यत्रवेजावनयुविष्टदिग ॥ स

चदियचक्रुषायावलाकगचदवनिकायनयसुगिस्मेदजवजकस्मान्यस्य॥^{त्रु}थसपूनप्रवाविशोमहान
 जकयवलाकगस्मान्नवाविशोमहानप्रकवप्राकिर्गजवकाधिसत्त्वामसासैंसैंसलववयुस्यगिस्म॥^{अथ}
 सयमात्राजायनावप्राकिर्गजवकाधिसत्त्वामसासलसुनासैंयुसंक्रान्ताउयसकमरजवगु॥^{यादोशि}
 प्रसावदित्वासाविश्वकर्ममात्र॥^{नमात्रवप्राकिर्गस्यजाय॥}महज्जजाय॥^{युगमशियाय॥}वजदाय
 वसंकजाय॥^{यिथिविवजलावनकजाय॥}जोश्वंनकजाय॥^{सगणदसुहजाय॥}काटिगतसदसुनगाय
 उकादजजिर्कय॥^{वज्रवाम्बयय्यगाय॥}धर्मययाय॥^{सर्वसल्यलिभाकनकलाय॥}कर्मसकलमग्ग

सर

सनकजाय॥^{ज्ञानत्राभिर्कर्मकजाय॥}प्रियंददाय॥^{जन्नशियाय॥}उर्कमाय॥^{अविशिर्सज्जखनक}
 जाय॥^{ज्ञानत्राभिर्कर्मकजाय॥}ज्ञानप्रियाय॥^{सर्वददय्जिगनमसुहगाय॥}वदित्ताय॥^{अरयंददाय॥}
 षट्पात्रमिताय॥^{निर्दसुनकजाय॥}सूर्यवज्रावनकजाय॥^{धर्मदिवकजाय॥}कामत्रयाय॥^{सूर्य}
 षाय॥^{गंधवेत्रयाय॥}कासनयजवक्रसमात्रुधाय॥^{सागजकृष्णिगमिर्त्रधर्माय॥}यत्रमार्थथागमन
 प्राकाय॥^{सुमुखदजर्जनकजाय॥}जनकसमाधिगतसदभावकिनाय॥^{अहित्रागिकजाय॥}विह्वलि
 उग्रगाय॥^{अवियुंगजाय॥}हगिस्मार्गयुलिभाकनकलाय॥^{सत्वालदसंयुक्काय॥}वहव॥^{यत्रिवाल}

सर्वतनियाय उयचिउकत्राय विनासनित्रनाय विक्कीनमार्णयदर्जनकत्राय पुननजत्रमूका
वनकत्राय कुरुतजगनकत्राय व्याधियलिभाकनकत्रा नडायनन्नानाजत्राकृगंजहूयवि
नाय न्रमाद्ययाजदत्रजनकत्राय न्रन्यकजनावकिह्लिय वर्जयानिविदाययुनकत्राय त्रिआकरय
कत्राय ऊकत्राकसहगवतात्रदाकिनिकूराहुयजम्मीलसंक्राजनकत्राय निआत्यत्रनगाय गरि
त्रधियटय विद्याधियुनय सर्वकेजकिभाकनकत्राय पुनयलिभाकनकत्राय विविधवाधिसा
स्त्रोयचिनाय समात्रधभाकमास्त्रोयवत्राय न्रगुयचिनुवाधिसास्त्रयचिनाय पुनयत्रिभाकनकला

य पुत्रमाहत्रजायमसमाधिसगजहमायकिह्लिय न्रदजभात्रात्राविषगत्रंसात्राविधमकलायून
त्रधियभात्रात्रात्रि पुदकिह्लियेनमेवयकामत्रहवन् न्रथसर्वहिवत्रहविह्लिरहगवर्कमेनद
वाचन कदाहजवानाजह्लिनित्रवत्राकिह्लिज्वत्रवाधिसत्त्वामसासत्त्व एजवानाजह्लिनित्रवत्राकन
ज्वत्रवाधिसत्त्वामसासत्त्वा एजवानाह न्रदंक्रजयूराविशेमसानत्रकानिबुमपुननजत्रयविह्ल
न्रनकानियुनसहमानियुनसाह्वावनि दगुसह्वायुतिरित्रस्तिगनुवदकिह्लि स्वकजत्रामयुनि चिन्ने
युवभादत्रसनिह्लि सचिचिन्दायमसखे यदावलाकन ज्वत्रवाधिसत्त्वामसासत्त्व पुननजत्रमूकय

संकामति ॥ गदासयननजत्रातितावमनृजुमि ॥ सववजासनिव्यूयसनिगा ॥ सवदात्रयात्रयूत्र
 काउद्विहियिहियाल ॥ कालकटवगुदसालाहिनाक ॥ सवास्यानृवायनमेवविगुंरुंलावयमि ॥ नवमंरू
 दृशंकर्महमिदुगम ॥ अथार्यावजाकिनृवजावाधिसत्तामहासत्तुसयसुवात्रिकायतुकासदा १३
 कल ॥ विरुमस्यादा ॥ दसर्वादादसर्वनलनिनिष्कमतिपादाकृतिगादसर्वनलनिष्क
 ॥ अतिकल्लमहिलेनस्मावलाकिने ॥ ज्वलास्यवाधिसत्त्वमहासंस्त्यलोमकयथानद्यानिष्कमति ॥
 अष्टागवात्रिनायलियुक्तामहानद्य ॥ यदातउदकमास्वासयति ॥ गदातेविपूत्रकंठाएवमि ॥ यत्रि
 हलागुलिया ३ ॥ २ ॥ मलि ३

पूर्वजग्राज्वरवमि ॥ दिव्यत्रसलज्जयनातादात्रसजन्तयिगाज्वरवमि ॥ गदासंतालिकाविनाविचिगयमि
 अष्टावगायंजाद्विद्यकामनृवा ॥ यजिगलाक्कयायलिसवमिसुखिगाकंम्वदियकामनृवायमानायिगजा
 सगतयलिगुदस्यस्तानंकुर्वन्ति ॥ सुखिगासंनयूत्रवायकल्याणमृगसगनंयलिगुदयलियालयमि ॥
 नसयूत्रवा ॥ सवतनायमहायानसगनंसमिगमंयज्जहयमि ॥ नसयूत्रवायत्रायष्टाउज्जमाजयवात्रम
 युवजिगाएति ॥ नसत्यल्लवायधर्मजह्नुमाकागयंठि ॥ नसतयूत्रवायचठिगह्नुमिगाविहात्रादियमि
 सस्कात्रकुर्वन्ति ॥ नसतयूत्रवायदधीकानित्त्वयविम्वानिरतिगह्नुठिगानियमिसस्कात्रकुर्वन्ति ॥ नस

तस्य नृवायधर्मलानकयलिसर्वयाति नसगद्वयवायधर्मलानकयजिसवयाति नसत्यनृवायगथ
 गगचक्रमानियत्यति नसत्यनृवाययनकवर्धचक्रमानियत्यति नसत्यनृवाययलेकवर्धचक्रमानि
 यत्यति नसत्यनृवायवाधिसत्यचक्रमानियत्यति ॥ ॐ हवसजिप्रमन्विषियमानसगदाकाप्रहृष्टरुमा
 हायानसुगप्रज्ञाऊगगकातिनिष्ठजति ॥ गदागवाधिशठिजिखत्र ॥ समजजगत्कायदृष्टिर्ज्ञानवर्ज ॥ १८
 छलित्वा सर्वगसूवावशालोकधकुव्ययुना नकि नमृषानासवाधिसत्याउययुत् ॥ जवजाकि नश्चत्रयदागा
 सत्यधकुयलिमाचयित्वा ॥ यनत्रयिपुननगजाति कामति ॥ अथ सर्वतिवर्धुविल्लिरिजवगभगदवाचठ

॥ एगवान्द्रायिजर्कमिलोकेश्वनवाधिसत्यामहाकथ ॥ एगवानाह ॥ अन्यकानिकुजयुगसत्यकामिहिय
 नसगसहस्राहियत्रियाचयतिदिनदिननासिकुल्यतंदृग्गयतिहाननकथागतानायाहसंजवलाकि नस
 प्रसवाधिसत्यसमहासत्यस ॥ १९ ॥ अथ सर्वदीवनविरुक्तीवाधिसत्यजाह ॥ कनकाजहानरुगवन
 तगवानाह ॥ तनयवर्धसकुल यगतिगंधन्यगस्थये ॥ कल्यविष्णीनोमगथागतानरुहर्कसमककवी
 धीलोकउदयादि विद्याचत्रलसमत्वा ॥ सगालोकविदन्तु ॥ यत्रषदम्यसात्रयिसास्त्रावाचदवानाकमन्
 व्याहृष्टवृकाएगवानरुनकात्रनगनसमयनाहसर्वदीवजहविल्लीसृगन्धमुखनामवतिकयुगाइ

लसुदाभं गंधियश्चिननं तथ गनस्य सकासात् ॥ आर्यावज किमंश्वरस्य गुह्यं एव नाश्रुत्वा ॥ अथ सर्व
 दिवजन विस्मृतिरुगवगमनदवाचनं ॥ किट्टिजित्वा एतत्तु गुह्यं एव नावला किमंश्वरसंश्रुत्वा ॥ एत
 वानाह ॥ सर्वं तथ गनं नवमसावज किमंश्वरसं च कूषाचन्द्रादित्यापत्या भोजलाटासहंश्वर ॥ सधत्वा वक्त्रा
 ददया त्वात्राय ह्मदुष्टात्वा सनंश्वर मिमूषावायया जाजाधननियादात्वा म्यदक्षवज जाजागा ॥ यदा नृगंधवा
 जाग्राज्जवज किमंश्वरस्य काया गदामहंश्वर जाह ॥ कामं एतत्तनया कलाकुलं वाधया ॥ गदासंश्वरस्य
 देवयुगलं गदवाचनं ॥ एविष्यसि त्वमहंश्वर लकलियं यमियुने जेष्ठसत्त्व धातुयुपत्रं ॥ आदिधवात्वा यमं शु

म२

स्वात्रकर्मजकसत्वाकाधिमाम्जोदविप्रसिद्धा एविष्य ॥ ॐ बुधं यथ गजं न्यषां कथं क्वचिनि ॥ आकासत्रिजमिथो
 ह ॥ यथिगमयिथिकात्राय सर्वं हाना ॥ लियनालिणमयं ॥ ॐ दृष्टमया कृत्रयुगविप्रश्चिनसुतथ गनसं
 काक्षदार्प्य वला किमंश्वरस्य गुह्यं एव नाश्रुत्वा ॥ गदया मित्रम्यजिषिनामगं तथ गनं ददकं समकवृक्षावि
 याचननसंभन ॥ स्रगं गालोकविदं नृकं ॥ यत्रुवदमसात्रयि ॥ असादवानां ईदृक्षा एतवाधनकात्रन
 समयनाह सर्वं दिवधुविस्मृतिरुगवगमनदवाचनं ॥ नस्यमसकाज्जवज किमंश्व
 रस्य वाधिसत्त्वस्य मसासत्त्वस्य गुह्यं एव नाश्रुत्वा ॥ अथ सर्वं दिवजन विस्मृतिरुगवगमनदवाचनं ॥ का

दृग्गणवत्त्वया उद्भूता वना वलादिगो ज्वज्ज्वज्ज्वला ॥ रजवा नाह ॥ यदा सर्वदिवाना जयका गन्धकोला
 कृष्णज्वज्ज्वला महे ज्वज्ज्वमन्व्या मन्व्या ॥ सन्नियतिना ज्वल वन् ॥ यदा रजवा महासुनियाने दृष्टा गेया य
 र्द्योमध्य धर्मज्ज्वकथकलु मात्र पुष्पा ॥ तदा रजवगा म्बदा ज्ञानाना वहु जस्मया हि ज्वज्ज्व ॥ निजयिग
 लादिगा वदात माहि ॥ यदुठि कत्र उठ वहु निज्ज्वला दधदिगदिहू सर्वाना कधक नवरा ययूनत्र वा ॥ ६
 गगे गजिषिननि ॥ यदकि निरुगे रजवत्त्वम्वदा जयु विद्या ॥ अथ गस्मिभवयवदिजन्नयानि नामधाधि
 सत्त्वमसा सत्व ॥ उन्हाया सनादका समूला संगकुलादकि नज्ज्व नूमहुले पयि यांयुं ह्या ययन रजवा सुना
 वि १

विस्तृतका
 ज्वज्वनम रजवगम नदका व ॥ किं कत्र रजवत्त्वम्वदा ज्वज्वज्ज्वला ॥ रजवा नाह ॥ ७
 महु ज्वज्वला वजा किगे ज्वज्ज्व ॥ सुषो वतिना कधका वा ज्वज्वला ॥ तदा विविधानिकल्प विद्या ॥ रजवत्त्व विस्त
 रति ॥ कुन्दरुका ॥ सगर्ग ज्वज्वला ॥ सव्य कवका ज्वहिनमति ॥ ज्वज्वला वति ह्ति नित्य व्यात्रिद्या ॥ यादर
 वति ॥ ज्वज्वला जगानि गगादि सगर्ग ॥ विविधानिकल्प विद्या सगानि जन्नमया म्बका वज्वेदु र्यजयगिला
 यवादानि विद्या विवगावर्षा नित्युगनि ॥ गस्मिन्नववित्र समिप्य सकत्र नानि यादरु गानि ॥ तद्यथा चक्र जन्न
 मनिजन्न ॥ ह्ति जन्न ज्वज्वज्वला ज्वज्वला ॥ ८ वसम्भ मत्र ज्वज्वला नाह ॥ सुवहुतिना सा सट्ठ

न॥ यदा वलाकि न भवला वाधिसत्त्वमहासत्त्व॥ सुखावत्ता लाकधर्माति॥ कान्त ४ न दक्षिणादः
सा लाकधर्मा ४ सर्वा यथा यथावद्वा दय॥ यथा नायि विविध कालुष्य कस्यित॥॥ अथ
त्रययादि वाधिसत्त्व हज वक्तं मरु दयायत्॥ कस्य निमि र्क निरुगवत्री डं गुहया दूरु तानि १०
॥ रुजा वा नाह॥ नृप क जय गृह्णै नै या विदुः न वजा क न गो वाधिसत्त्वमहासत्त्व लाज कृमि न सनि मि
रुमि दृज्या दूरु वनि॥ यदा वलि न सुदाम नो न मय म्म दूर्व सुयति न॥ न दा वजा कि नो ज्वत्र वाधिसत्त्वमहा
सत्त्व सदस्यु गानियु न्न निस्व धृद ह्नु निहिला ज्यनि जट हित्वा यन रज वा सु नाय स का ना उय संक्रमत्

[illegible]

रुद्राया समकक्षाध्वोयुनिष्ठा ययिगया ॥ अथ वत्राकृतेष्वत्र वाधिसत्त्वामहासत्त्वं त्रयसनवाकलनं ॥ कला
 एजवत ॥ यादौसिप्रभरिवद ॥ नृकान्कयुक्तान् ॥ यत्र सित्वाजलमग्निमिवयिद्युमाकास्यजेनदित ॥ अथ
 प्रत्नयानिवाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ एजवतकर्मनदकोरु ॥ १६ ॥ यच्चमहंरुगवान्पञ्चवाकजहमृद्धः १८
 अंकिटुमसंबलाकिनग्वलस्ययहसहाज ॥ १७ ॥ रुगवानाह ॥ गन्तुकनयत्रुनिद्वेजयामि ॥ जवत्राकि
 नग्वत्रयुन्यस्कन्ध ॥ तद्यथाकेविद्वजगमनदिवायूकायुमासुथगताजहं ॥ समकवृक्षा ॥ दिव्यकल्प
 द्रव्यद्वयजन्धमानविजयद्युविवलक्ष्ण ॥ अर्धंष्टायताकारिष्विवलयिद्युपा ॥ सयताजिनजला

[illegible]

चक्रव्ययदा ॥ सिद्ध्याद्युमकनत्रकसृजमदयाभजधवा ॥ पुसनहस्तिनाउज्वमहिथामार्जीत्रादय ॥ ५
 नसूरुव्यादयुजमयैकैकमजामजहयिनु ॥ नरुक्त्रयुगावलाकिनेज्वजस्ययद्यसृजजगनयिनु
 तदथपिनामकत्रयुगयुजमादत्रजायमास्तथागगाहनेसमकवृक्षा ॥ दिव्यसुवर्हत्रनेमयाकृपाकाल ॥ १६
 यकात्रयिलानुकृष्टानवात्यावलायनकृष्ण ॥ तस्यमयाकत्रयुगावलाकिनेज्वजस्ययद्यसृजजगनयिनु
 हयिनु ॥ तदथपिनामकत्रयुगजकैकमया ॥ जिर्वगवनस्यैकमकयगात्रिजगनयिनु ॥ नरुक्त्रवलाकिने
 ज्वलस्ययद्यसृजजगनयिनुसकृ ॥ १७ ॥ तदथपिनामकत्रयुगचक्रमहादियगियत्रयदत्रिकारु

सर्वभूतत्रायतिरुजससृतादाभनिरुजनेनाभनिरुज ॥ नरुक्त्रयनेकवाधुनियाजयग ॥ यथाभवायद्य
 स्कन्धनरवत्राकिनेज्वजस्ययद्य ॥ वात्राज्ययुन्यस्कन्ध ॥ ज्वजत्रयानिगधिसत्त्वामसासत्वाएजवकम
 तदधोचक्र ॥ नमएजवान्कदाविदिदृजमचिस्यतथागगानायुन्यस्कन्धदृष्टमृगमवायाएववाधि
 सत्त्वकनस्ययादृजएजवनवलाकिनेज्वजस्यवाधिसत्त्वसयद्यस्कन्ध ॥ एजनाह ॥ यत्कत्रयुगम
 मसदृशसुथगगानानरुहक ॥ समकवृक्षाएवयुस्यैककृष्टानधजय ॥ दिनकल्यविवत्रयिनुयाउग
 न ॥ ग्लानयुन्ययहैवययत्रिस्तानैरुवतथागगानानरुहक ॥ समकवृक्षाएवत्राकिनेज्वजस्यनजकृवुकि
 लु

यत्तत्कथं न दायितुं ॥ यास्य वक्त्रं यत्तत् ॥ ग्राहमकाकि नृत्ति निवजा दृष्टं ॥ अत्र कथं गोविन्दनामि ॥ १ ॥
 जयं सर्वं नथ गता दशत्यादि जं ॥ नृवं वाचमहावक्तुं सुखिना जा कं हवति ॥ नृवं जाकि नं जय जय वाचि स
 त्वस्य महासत्त्वस्य नाम नृत्त्यत्र मि नं जं जा म ज न या धि द् ॥ खयुत्रिमुक्ता हवति ॥ नृद्वय उचि म स गज क र द
 न ह व ॥ नि ॥ गं जु कु या धु जय ट ॥ व ना ज ह सा ॥ यत्तत्ता य व ज ॥ व ज क्ति ॥ सुखा व ति ला कं जय ज क्ति म ॥ २ ॥
 नृमि ना र स्य ग थ ग न स्य स म्मुख धर्म ज व ह्ति य ॥ धर्म ज्त्वा य स गज क र द् ॥ ख नृखा का य न वा ध न ॥ न
 च ना ज क्ति व मा द न जं जा म ज नृ च गं वा क्ति द् ॥ ख का य न वा ध न न र नृ ज्त्वा वा ज द् ॥ य म नृ स्म ति ॥ न स्मि
 द

नृवयुक्तं ज्ञायते ॥ धर्म ज्ञानं यत्तत् ॥ स नृय लि गुह व स्ता यि ना स्ता व न स्मि नृ ला क धर्मो नि सु कि
 या व द व जा कि नं जय ज स वा धि स त्वस्य महासत्त्वस्य दृष्टयुक्ति ह्ता न य नि य वि ना सर्व सत्त्वा य नि मा क्ति य नि सु
 यि ना ह व ति ॥ अथ ज न्म या नि वा धि स त्वस्य महासत्त्वा र ज व न म नृ क यो च न् ॥ क ठ म का प्र र ज व न् सा दृ ट्ठ
 मि क्ता य नि य नृ य नि ॥ सर्व सत्त्वा मा क्ति य नि सु यि ना ॥ र ज या ना द् ॥ व ह व ॥ स त्व का ज ना ल स गज क र द्
 ज नि न थ ग न व न या न् य ना स त्व ना न थ ग न नृ य न ध र्म क ज य नि ॥ य थै क व द् व न य ना ॥ य थै क व द्
 नृ य न ध र्म क स य ॥ अ ह त्व व न या ना स त्व ना नृ ह त्व नृ य न ध र्म क ज य नि वा धि स त्व व न या ना वा धि

सत्त्वगुणनधर्मद्वययति ॥ महज्जवावेभयानासत्त्वाना ॥ महज्जवल्लयनधर्मद्वययति ॥ नात्रायनगुणनधर्म
द्वययति ॥ बुद्धवेभयानासत्त्वानाबुद्धगुणनधर्मद्वययति ॥ ॐल्लवेभयानासत्त्वाना ॐल्लगुणनधर्मद्वययति ॥
यति ॥ आदिश्ववेभयानासत्त्वानाआदिगुणनधर्मद्वययति ॥ चन्द्रवेभयानासत्त्वानाचन्द्रगुणनधर्मद्वययति ॥
यति ॥ जगनिवेभयानासत्त्वानाजगनिगुणनधर्मद्वययति ॥ वज्रनवेभयानासत्त्वानावज्रगुणनधर्मद्वययति ॥
सयति ॥ वायुवेभयानासत्त्वानावायुगुणनधर्मद्वययति ॥ नागवेभयानासत्त्वानानागगुणनधर्मद्वययति ॥
यति ॥ अविद्यानापलिवेभयानासत्त्वानाअविद्यानापलिगुणनधर्मद्वययति ॥ यक्षवेभयानासत्त्वानायक्ष

न

नृप न धर्मदंशयति वेष्टवैष्टु मनवे मयाना सत्याना वेष्टु मन नृप न धर्मदंशयति नाज वे मयाना
सत्याना नाज नृप न धर्मदंशयति नाजरुठा वे मयाना सत्याना नाजरुठ नृप न धर्मदंशयति माता
पिता वे मयाना सत्याना मातापिता नृप न धर्मदंशयति यथा वे मयाना सत्याना यथा यथा नृप न धर्म
दंशयति नृवं कुल युगा जेव जा कर्णं जेव यो धि सत्या मदा सत्य सत्या धर्मदंशयति यत्रियारयंति ति
वीहत्तुमि स्य दयति नृथ नृन यानि वाँ सत्य एग व न भन द यो रन यत्र मा प्त र्यत्तु गया ला नृदरुज
वान् नर भ कदा चिद स्मारि त्रिदृशा द्योषया दृष्ट्या गुरु न्या यो दृष्टे न मव ला कि नृव नृस्य यो धि सत्य मदा स

३२

लस्य ॥ नादृशगन्धगणानां सविदं ॥ एजवानाह ॥ जलिकृत्रयूग्रास्मिन् दजम्बुद्विषवर्जकृत्नाम
 गुह्यगणानां कानसूत्रकाटिनियुतसतसहस्रादियुविदसंति स्म ॥ तत्र कृत्रयूग्रा जवभाकृन् जवत्रवाधि
 सत्त्वामदासत्त्व ॥ जसूत्रलयनासलाहमधर्मदजयनि ॥ जयमवभाकिन् जवत्रजसूत्रानाकाजद्यदह २२
 मदायानसूत्रं जत्रजाजानसूत्रसयनि ॥ जसूत्रानाधर्मजिन्धनु एवगायवानेहसूत्रवर्षदहमेगवि
 क्री ॥ जमन्तचिन्ता ॥ गं जसूत्रा ॥ कृत्तकजकुंठा जवभाकिन् जवत्रसूत्रधर्मयुय्यार्यज्जवति ॥ जसूत्रिनाला
 कयं ॥ दृशं सूत्रा जमहिसूत्रिद्वर्गि ॥ जसूत्रायुलमयी ॥ जमत्रव्यहमधमसयनवनमकृद्वनि ॥ गं

४२

वाचस्पतिनगराजिकर्मद्विक्रययनि कययित्वायुलिगुरुकायारविषयनि मजनकात्रकोदशन
 थजगाउयसंक्रमनि कंचसर्वतथाजगात्राजसयनि माहेषिकुत्रयुतलयाकारंघुयुदमहाया
 नसुत्रत्रनार्जसुत्र विविक्षसुमात्रो सजिकुगा सुखादनिजमनयचनरुसुखादयो लोकध
 नोनवाविविचित्रुभूनेच्छुसिंहासनसजिकुर्ग दिव्यभालिर्कुंघुजगुग्दासमिदशनन्यनिमिर्लभल
 दकात्रसमयइयत्रियनिन प्रदसुखादतिसमनूणकुनि प्रदसजत्रनयानयनि विधिष्यतत्रय
 नेदत्रददर्थसवलाकिनेश्वत्रवाधिसत्त्वमहासत्त्वनिर्वीहिकिरुमिमूयदर्जयनि रेसुत्रानानिर्वी

दमयदजी नं० सर्वथा युति वा नमर्थ॥ न नर्गल वाधि मार्गयति ह्यनार्थ॥ १॥ अथ नत्तयानि वा
 धिसत्वसदासत्ता रजवत्क० ४ या दीति नसा हि वन्द्य तत्तव युक्त० ४॥ अथ सर्वदिवल न विस्कं स्त्री
 रजवत्तं मं नदकायत्त॥ अति इत्वं रं रजवत्तं स्या वला किं न स्व ना स्य विकृति ना नि॥ अथ नं गृह्णामहाव
 नानिचः रज वानाहः अथि वकुल कृत्त स्याद्वरु कृत्ता यया नित क का के नमर्या दाहृ स्मां प्रविष्य सुदा २३
 गु नाहा वतां गत्य तदयि यद्वं न ल युवचनं॥ अथ नदयि सममि कुम्भ विज्वरु ना सन थागना इह मं म
 सु सं वद्धा विद्या च नतः सं स नः सुग ना जा क विद नरुं ॥ यत्न रवदम्य अस्माद वाना के म न्द व्या म

के० वद्धा रज वाना न काल न न न समय नाह सर्व निवल न विस्कं स्त्री वा धिसत्ता का नि वा दि लि वि न र
 जि जी गद जा न न क वरु स्ता न वा स्य म न्द व्या म य व च यि वि वि युदं ग विद ना मि न था का ला न्द
 कालं मया न था ग न स्य स का अ म गृह्णामहा वं ना गु ना॥ अ वला किं न स्व न स्य वा धिसत्वसदा
 सत्वस्य गु ना॥ ना ना वि वि धि सर्व सत्व य लि या च न॥ अति सर्व दिव कृ विस्कं स्त्री सा का के नमयि नाम
 ह मि अस्मि य द्ग का श्र न म यी ह स्या गत्वा अ धम स्या ना सत्ता ना ध म्म के अ य नि॥ अथि वा मि क म्म अ
 नि वा दमयद ग य नि स ग रं॥ का व न म यी ह स्या नि यु मि लो नू य म यी ह मि यु वि अ नि॥ ग र सु यु अ नि
 च रु धा दि का नि य न्द्र य द्ग जा नि र व नि॥ न वा अ व जा किं न स्व ना वा धिसत्ता सर्व सत्ता ध म्म के अ य नि
 स्त्री

ॐ ह्यन्तु एवमा सर्वयुग्मयुग्मना ॥ अहिमुखधर्मयुग्मयुग्मवदमाद्य ॥ सुखनसाभिर्वाहिकसम्वज
मन्विविक्तयन ॥ अथनैयुल्लुषाजवलाकिनुःश्वनस्ययुनसित्या नूनद।वायन ॥ जागमसेयत्वं
अन्धतुलानांसेत्वा नासाप्रा माप्रासुखदर्जकाहव ॥ जेतानां सत्यानां नानह ॥ य ॥ अजान्तानां
सत्यानां नानहय जायर्मा नायिगुरु मा एवमादेहिगु नानायेनस माग्मनादियुल्लुगाहव सचेकमा
कृमाग्मम्यदर्जक ॥ सुखिनसु सत्यायनयजगठप्रसिग्टरुनाममस्रजनिमूकनिगं ॥ २४ ॥ स्व
यादृजंययंयुल्लुषाजवलाकिनुःश्वनस्ययुनसित्या नूनद।वायन ॥ जागमसेयत्वं

कथं यदं निष्ठा जयति ॥ नदयि नयनूया ॥ गृह्या इवे वर्तु क ह मि नि ष्ठा दि ना ॥ यत्र मसूख समधि
ना सवृष्टा ॥ अथा र्था व जा कि नं ष्वत्र वा धि स त्वा महा स त्व न व्य नूय म र्था ह म्या निष्क म्या न न जा या ह म्या
य वि स नि ॥ जया म र्था ह म्या य र म जा जा व त्रि ल स प्र ङा व द्ध ॥ स ग से व स का न म य सं का न उ य स व म्य
जथ स व लि ज स प्र ङा द न न द र्श न या नि ष्ठ नि ॥ स व र्ध नि म्ब मि व त्र सि ति ॥ य म र्क मा भ ना जा व र्ध व लि
न वा व जा कि नं ष्वत्र ॥ वा धि स त्व महा स त्व द न न वा ज क्क न म्य ष्थ नि ॥ दृष्टा ष्ठ सा न ॥ यत्र य लि वार्त्त ॥ सा
ह म भ कं ज स ल न ज नं ॥ दू ट वा म न का दि ति ॥ स र म य लि वार्त्त ॥ जय जा कि नं ष्वत्र स्य वा धि स त्व

समस्तसुखादयानि ॥ युक्तं जह मृदा नमदानयस्मिन्माह ॥ अदम्यसद्वर्जसु जातिवृद्धिमतात्रथ
अदम्यं वृद्धिं वैदयर्हसिदुलभवर ॥ अदम्यं नमयर्हयलिङ्गद्वयद् यन ॥ यमयादजनसमकद
स्रष्टा केववाधव ॥ नयामसर्वं चर्या नियञ्चिन्मिह नैयन ॥ सुखिना एव निरसत्वा सर्वद्विषयविजिना
संसारवधनाम्कास्मिन्सुखमादक ॥ मयापि दण्डनैर्नैव सर्ववैरुति नवधना ॥ द्वाहृत्तमत्रयु २७
यन्निजं नृजमेव युनय ॥ अथ जना जावलिसुखरजव न जेव प्राक नैव प्रसया वथा युवियु ॥ अ
भवलाकि नैव लसमस्तसुखादयानि ॥ नैव प्रत्ययिथ कदलादजनखा ऊर्लिकला ॥

नममाह ॥ अयितरुजव निखिदला चरुस्मिना जम ॥ अनृष्टमक प्रयायना नायिजदा जमनय
नका नां गामिना नां द्वाका नायुत्रया हसि सका नां जनामत्र हयलिङ्गा नाम्दिगुमानसा नां ससात्रव
खाका नागा गारव ॥ अनाथनामा नायिगुगारव ॥ नयामस्माकवधनवधनामा जमयदणय ॥ अ
वलाकि नैव प्रजराह ॥ नयथयिनामकलयुयनथा जमत्याहर्क ॥ ससम्यकवधस्यपि ह्युयामन
ययचुनि ॥ गयामिदं यद्दमस्कन्धयुवका मि ॥ नयथयिनाक प्रयुष्टादणजं जमनदिवा लकायुमामस
दलावाधिसलामस्तसुखादयानि ॥ नैवैकस्तानक्षलययद्विर्विल्ययमा हामृष्टदिनु ॥ सर्वसुखायुध

[illegible]

द्युत ॥ न चैक द्वि यत्नं कुर्यात् ॥ सर्वं न नि युज्यदा ज कदा सि का दय ॥ सकटे ला जे युटे सटे नृखे र्ज
 रि ज द हे ॥ सर्वं न ज द यित्वा नैस्मि म सा ख ज के म ह न ना सि कुर्यात् ॥ कालि र्ज ध र दि रि म द यित्वा म हा
 न ना सि नि षा द यित्वा ॥ न क के क ज य ॥ न क म क ह ज द द य न ॥ न क क ज य ॥ न क न यि धु पा र स य
 ध र्ज न ध ज न य न ॥ न द य थ यि ना म क ज य ॥ स म ज य र्व न ना ज स च क ॥ ल नि नि या ज न स ह म न य
 ध र्ज द य म न ॥ उ के न च क ज नि नि या ज न स ह म न ॥ कु य न च स क ज य ॥ ह क ना र्ज ना जि र य न ॥ म हा
 स म न्द्रा म ज द क य लि म नु र्ज र व नि ॥ य व र्जु दि य नि वा जि न ॥ नि य ल य दा ज क दा दि का र्ज स र्व ज ना

प्रत्ययः॥ सुचस्रभज्युर्वेन जातस्य॥ अनन्तायर्थं लिखितं न च कुत्रयुक्तं जकमया नृकमकाकं न
 जनयन्तु॥ ननु कुत्रयुक्तं जकं न विद्युपाणस्य युष्मन्धजनयितुं॥ नदथापिनाम कुत्रयुक्तं जकस्य
 वनेदजहमियुगिलिगावाधिसत्वात्तय॥ यथ्ययुनयचनवादिजहमियुगिलिगामावाधिसत्त्वानामसा
 सत्त्वानां युष्मन्धनमेकस्य विद्युपाणस्य युष्मन्धजनयितुं॥ नदथापिनाम कुत्रयुक्तं जकजनदि २१
 वालाकासम्प्रास्य जकमया॥ नृकेकं वा नृका जनयितुं॥ ननु कुत्रयुक्तं जकं न मया विद्युपाणस्य युष्मन्ध
 धजनयितुं॥ अथ वलिलसूत्रं दं च न स एव न वलिलं नृका विद्युपाणस्य सन्तम्

लस्यसूत्रं वा नृद विजंयाणं त्वनस्य निदजमानस्य तत्सर्वमन्माद्यसान्॥ यत्रयलिवान्नं एव
 वनं नृदवाचनं॥ अथ वलिलसूत्रं दं॥ सासूदृष्टिननवदनावाव्ययत्रियुष्मन्नुजटदकं यलियुष्मन्
 उक्तवजानवजोकेन नृका विदिसत्त्वमसासत्त्वं नृदवाचनं॥ कदिहमया एव नृदवाचनं विना कर्मक
 नं दानंदं॥ यन्नदिवर्जस्मनि वधनमन्यायं सान्॥ यत्रयलिवान्नं दं कं मया दानंदं कं
 नस्येव न कर्म हनृदमनृदवामि॥ अथ वा सर्वं कं कं एव सन्मृष्टि मयदियस्य मगि नृद नमयि
 यलिनियदं नृका इहानेनयहं यजिकं न॥ नदामवा मनक नृदवाचनं कदि नृका गतं॥ नस्य
 न

ममोत्रिकुं धुल मुग्धा मा द्विज त्वा एव धमनि रं ह्य च तथ निम्का प्रत्न क व चा निम प्र क न य ज वि
नानि राम प्र य ज वि गानि म्का सा ज निम्कि जा प्र यु ज वि नानि प्र मि च नानि म्कि का क ला य जा ज गु
लिकानि सो व द्धु च टिका न्य नि व द्धा नि ज न प्र द्ध य मा नानि ॥ ज न्य च क पि ज स ह मा नि प्र य या दा नि सो
व द्धु र्ज अ नि म्का जा प्र यु ल वि गानि य मि च ना ना म र्घ या ए समा यु क्ता ना ना द्ध अ द्ध क पि ला नां ज न्य २८
अ क्क मालि ज न स न स ह सु यु ज मं धु र व द्धु यु क्क ज न या स म त्वा ज नां यु ज म सा र ना म य स ज म्क नि
व प्र मि भ दि नि दि याल का ज वि द्धु वि ना मो लि क्क धु ज स न दा म य लि क्क पि का के य् ज क ट क म् य् ज क

टि म र व ला रु ला रु यी क द्धु य द्धु रु यी द्धु ला गु लिय ना वा म गु द्धु समा यु क्ता व ज व ला य मा ना समा यु
क्ता ना ना जं म य् ज क व र्ण या द्धु ना न् ॥ ज न्य नि व ज न यि ठ ज न स ह मा द्ध न का नि स व द्धु ना दि न्य य ज
जि नि ज न्त्र ज जि नि ज न्त्र ज जि नि स्का पि ना नि ॥ ज न का नि च व का र ज ध नि स्का पि ना नि ॥ ज न्य का नि च र्ण
कू ज स ना नि च र्ण क या ज समा यु क्ता नि स जि द्धु ना नि ॥ ज न का नि ज न्त्र या न ज ना नि स्का पि ना नि दि य
ज स ल सा गु य ना न्या द्धु ला मि स जि द्धु ना नि ॥ ज न्य का नि स व द्धु न्य म या नि र्घ द्ध नि ज न्त्र सं यु क्ता
नि ज न्त्र न्य व स्का पि ना नि ॥ ज न्य का नि स व द्धु न्य म या नि र्घ द्ध स ना नि ज न्त्र सं यु क्ता नि च ॥ दि यानि

सामप्रदक्षु निष्कृता ध्याया दानिज त्रयलि वस्ति गानि ॥ अनेकानि स्वर्ग मया निमोत्रि कृत्तुल मुदा
 मसदुमा हि ॥ प्रज्ञाय चित्तानि स्थापितानि ॥ गस्मि सयत्रा ज्ञानसहस्रमुत्सन्नियामितं ॥ ब्रह्म ज्ञानसहस्र
 सनियमितं ॥ अन्यकानि कृतिय ज्ञानसहस्रानि सनियुक्तानि ॥ गदाह विमयमायुत्र ॥ गिरी वात्राय
 कृत्तुग्रायि विविक्तवान् ॥ नृगल्य ॥ वेकं वायं दं ज्ञायामि पुका ज्ञायामि ॥ कृतिय रार्थानां ज्ञानविनाय २८
 हृदयसूटयित्वा कृमासिकानां जिविता ह्ययत्राय यित्वा गतुं स्रमसा कृतिया ॥ सर्वमया हतिनिष्ठ
 बन्धनवन्धनित्वा गामुज्जुदा ॥ मनेकानि कृतिय सतसहस्राणि मया तस्या का मुज्जुदा र्थां स्थापितानि

यं वया कृत्युत्तु गितिनित्या कृत्वा यां ज्ञायामयानि ॥ किल कानि ज्ञानानि समायुक्तानि ॥ नृगल्य कृतिया
 यानां कृत्वा यादानीं वन्धनित्वा स्थापितानि ॥ गदाह सर्वज्ञानि ज्ञानि कृतानि ॥ युथर्मदात्र का ह्रमय
 द्विगियदा ज्ञानं किं ज्ञानमयं कृतियं दात्र मयामयं ॥ वक्तुर्थं दात्रं गाममयं ॥ ब्रह्म न दात्रं स्वर्गम
 यं ॥ सयर्मदात्रं ज्ञानमयं ॥ नृगानि सयदात्रा ध्ये के कदा ज्ञयं कृत्वा ज्ञानानि कृत्या गानियन्तु समा
 युक्तानि ॥ गस्मिन् स्वर्गमयदात्र सय युर्वगान्यपि स्थापितानि ॥ नृके कस्मिदात्रयके कयुर्वगानि
 नि ॥ उद्युययि स्थापितानि ॥ गता इह दग्गल्ययुग्म मत्वमानमत्वयामि ॥ कारिदिवसम

किं का नूय ह ॥ क विद्वि व स ग म ल नूय ह ॥ क विद्वि व स व ज्ञा नूय ह ॥ क विद्वि व स ६ मा नूय नू
य ह म व कृ त्वा दि न दि न ६ न्या नूय ह य त्रि ण मा नि ॥ न व स स र्व म नूय स्या मि ॥ त दा म नू वि वि
ला यित्वा य हू या ज हू ॥ त दा ण म द ग ल थ य म द व ता ज हू कि ना ६ ग ए य र्व र्ग ग ला न न स क य र्व ३
ना उ त्पा ति ना उ त्पा त यित्वा ल य नू य द ग ल यित्वा उ त्प न ग द न द र्वा कृ ति या द म ला व य
ति ॥ य धि यी ज न क ज स द द व हि म स्या ता र्ज न की ज स वा दि ॥ ज न्ये जा र्ज न ४ ग द म नू ज न १
गु ला य स मा स्या स का या स्व क य व र्ण ना ॥ कि व न्ना य य्वा क म थ द म ता ॥ त क थ य न्ती ॥ श्री वा मा

रु ग व त ॥ त न म दा की र्ण द य र्ण द स र्क ति ता नि द्वा जा नि न ग्ना ति या व क ना म ग्नु हा या य ग्ना
ति ॥ स र्व र्ग जा जा मा र्व ध न र्व ध ना द द्वा त ना य ह स र्व र्ग य ज स ज वि वि ग य नि ॥ जे व वा व सि ज स ज स
ज न्द्रा म न ॥ का ल ग न ॥ जे वा य न ज यि म ज ह का ल स्या र्क द त ॥ जे थ र्ग क थ य नि व ज म स्या र्क ॥ स ग्ना म र्क
मो स ज ह कृ व ध न र्व ध म ज ह ॥ य वा व ध न र्व ध का र्ज क र्क म स द कृ ति य ध र्म म स्या र्क वि न स्य नि
य दा स ग्ना म र्क मो का ल ॥ क र्क म स द स ग्ना य ज म व य र्वा म ॥ जे थ र्ग जा जा न स र्व र्क ग्नु र्ग ना ॥ त
दा ज थ या ज्ज न्या ज्ज नि ॥ स्व क स्व का नि स जि कृ ता नि य दा र्ग ज न्द्रा स जि कृ नू र्व नि ॥ म हा नि ग न्द्रा ति ॥ त दा

दधजत्रथयुं हतवामकत्रयमहिनिर्मायमृजत्राजिनानुरुप्रियावद्दहस्ययगृहसस्यसिग॥स
 स्रकामाह्वानमाजगा॥हात्रयाला॥६॥नृह६॥मायुविसवामनकवाकृह॥सकथयनि॥दजादवाहमाज
 ग॥जेथसहात्रयाजमनदवाचन॥वाकृनकगमस्याहमत्यमाजग॥सगमाहचनुदियादाऊवित्रहमा
 जग॥जेथसहात्रयाजयूषादलावलिमात्राचयनि॥दवत्राजगंस्वामनकावाकृह॥जेथसवत्रिस्तु
 मगदवाचन॥किदजवन्तुयाचन॥जेथसहात्रयाजस्वमगदवाचन॥दवनसन्मूर्जांनि॥जेथसव
 लिस्तुमगदवाचन॥जकुन्तुजवन्तुजानिजगाम्याकृह॥सगहात्रयाजयूषेनाहयाक॥सविस

नार

वाकृहसयुविह॥जहयिठमनुरुज॥उकुसगेवववकिग॥सचनस्यावा॥यवूषाख्यायमं स
 नवलिमगदवाचन॥नवकाजयूषवूषवयुविह॥जवय्यनविद्यागारविद्यानि॥वत्रिस्तुमगद
 वाचन॥कथजेमसरजवान॥उकुज॥उवाच॥जामामहंनमनिमितानिचिक्कानिचदहा॥वसि
 नार॥काव्यययम्ययंकुर्वीम॥जेथनात्रायहनविचिहोवय्यनुनस्यवियुनिसात्ररविद्यानि
 ननममसत्रस्वमुखनसा॥नदासकयनि॥जराजकुवाकृहददजक॥६॥हियाथाहवन॥स
 युविज्यमगदवाचन॥दयुदहमियोचयामि॥वसिन्वाच॥यदिगायामहावाकृधहोयुदया

चक्षुः मया निहितं दानि न दत्तं यदकानि ॥ सपुत्रि जहन्त्यनन्यपणं चक्षुःस्मिन् वाच ॥ जन्म हि
 न संनमि जयानियं सर्वं सहि न ॥ न न संनवा मनकं यमन कर्तव्यं ॥ जेथ ज्ञा का वलि मे न
 दवाच न ॥ जा जन्म कथि न मया कालयन्त्रं न बयुधिष्ठ ॥ वलि ज्ञाच न मत्तया यमान कर्तव्यं वसनं न
 लम्पि हे ज्ञा न रण वा मी ॥ न नात्मानं महायमा हि कर्तव्यं ॥ न सचन्द्रादित्यौ लक्ष्म्यं वलि गो जहि ३२
 त्या सो ज्ञा सि ज्ञाच कृध न ज्ञा न स्या म जहि दिया ज सन्न गच्छ ॥ जेथ वलि ज्ञा न ज्ञा ॥ ५६ मत्तया यमि
 न ॥ स्मृति ज्ञा थ ज थ ज्ञा यमा ह्मस्ति न ॥ किं कर्तव्यं न मया कर्तव्यं ॥ दिय दानिय लि दलि गानि ॥
 दिव

ह्मि य पुत्र न विद्या न ॥ न दास कर्तव्यं ॥ ह्मि य स्य यदन्न विद्या न ॥ यत्न मयु नि जहं या चि न कर्तव्यं
 यार्थं कर्तव्यं ॥ जेथ ना ज्ञा यस्मिन् न दवाच न ॥ यत्न ह्मि स्का यया मि न ज्ञा लया स्का न वी ॥ जेथ स वलि
 ज्ञा ज्ञा नु स म्म न दवाच न ॥ ज्ञा ज्ञा लया या ह्मि ॥ न ज्ञा कर्तव्यं सत्यं सत्यं कर्तव्यं ॥ सकथय मि ॥ स
 न्म सत्यं कर्तव्यं ॥ न न न स्य सत्यं या से ज्ञा न वन्द ॥ साच यत्न ह्मि विना सि ना नानि च रा ह्मि न्युक्ति हि कर्तव्यं
 नि ॥ यत्न यत्न ज्ञा ॥ न विदु मा ज्ञा ॥ या ह्मि ॥ को ज्ञा विविध सि ना ॥ नानि च सत्यं सत्यं सि हा स ना नि
 कर्तव्यं यत्न नानि ज्ञा यत्न विविध सि ना ॥ वत्तार ज्ञा नानि च सत्यं सत्यं सि हा स ना नि ज्ञा यत्न

काजधानस्य वन्धनमवत्रकं ॥ नमाम्मुके वाय ॥ यथेव कर्तुं सन्निवाया तालम्यस्तु विनम्रं ॥ यल
यलितानि ॥ नमाम्मुके वाय ॥ यथेव कर्तुं सन्निवाया तालम्यस्तु विनम्रं ॥ यल
तागुलवानिभरजवर्धन ॥ यथेव कर्तुं सन्निवाया तालम्यस्तु विनम्रं ॥ यल
श्रिप्रसिद्धगाय ॥ वदसुख ॥ अजनकजाय ॥ दिनदिना नृकन्याय ॥ दिवाकत्रवत्रलावनकजाय ॥ यथि
विमत्रलावनकजाय ॥ रथकजाउमर्कमाय ॥ सुधसुखाय ॥ यत्रमजागमन्याय ॥ भाक्यु
वजाय ॥ भाक्युयाय ॥ विनामनिवगजटयाय ॥ धर्मगजयत्रियालनकजाय ॥ षट्यालमिगादि

वर्गकजाय ॥ सुचननकजाय ॥ ॐ नमो ॥ अमयाकनमवत्राकन ॥ अत्रस्यवाधिसुखस्य ॥ सुवि
नासुसुखायचवनामनस्मज्जति ॥ सुचनकोत्रसुख ॥ अत्रवाययन्नवविशेषयन्नव ॥ यत्रवनाम
मनस्मज्जति ॥ सुचनकोत्रसुख ॥ यायत्यद्वयम् ॥ सुचननासुसुखायचवनामनस्मज्जति ॥ गच्छति
नसुखावगिलाकधमात्रमिगाहस्यगथागमस ॥ धर्ममनश्चयानि ॥ अथार्थवत्राकिञ्चनवाधि
सुखामहासुखा ॥ वज्रजसुत्रनुसुखाकधमन्ययच्छति ॥ अविष्यसित्वमसुत्रनुजिनामगथा
जनेहसुखो ॥ विद्याचलद्वयन्यत्र ॥ सुगमोलाकविदन्तुज ॥ यत्रवदन्त्यसुत्रयि ॥ अस्ता

देवानां कर्मन्त्या मकरं कृत्वा नाना ॥ सर्वं ६ स्रजं येन यावद्विद्युति ॥ गुरुं गववृद्धं कृत्वा नाना
जगद्वत् ॥ न क्व वनवनमाह जगद्वत् विद्युति ॥ स्वतन्त्रं त्रिमहाविद्या लघुत्रायावद्युति ॥ न न न स
धर्मदक्षिणा उयनामि गजगत् स्रजं स्रजं मृकाहात्रमयनामि ॥ गव्याल्ल्याखमस्रस्रस्र ॥ भोजिकु
क्षुप्रवनानात्रस्र ॥ कर्मा उयनामि ना ॥ अथार्थावत्राकिं न ज्वज वाविसलामहास्रस्र धर्मदक्षिणा ३ ग
कर्तुमात्रं ॥ ७४ ॥ महात्राजा न स्वस्रं न मान्त्रययि न यन्मि ॥ स्रजं यत्रिगुहं महास्रं न न्यत्रवि
विनयन्मि ॥ दाजिदाजकत्रमं कल्याण्ययानया निरमहा निधनधनधन्यकायकाष्टाजानि ॥

श्रेष्ठानां स्रज्याययुदात्रकदात्रिकामन्त्रविचिन्तयन्मि ॥ लक्ष्मीमानाधिनामो ॥ नृहिर्द्विर्मुहिर्यजका
स्रस्रयनायमा ॥ ७५ ॥ न नानात्रमकालसमयनकजचिन्तानात्रवति ॥ यदाया इमहात्रवति ॥ न
दाजं मृदि ॥ यत्रियत्रिगम्यस्यन्मि मरुति येन जनिप्ययश्मन्त्रं यत्रियर्ह्ययज्यन्मि ॥ यत्रमहावृक्षा
लान्यदियनान्त्र्युक्तजिनामककत्रिहनायज्यन्मि ॥ दृष्ट्वावर्त्तनासमायदं ॥ न गायमयात्रयत्र
कात्रयाजे ध्वनिनयनं ठवत्रिगं ॥ नृत्रध्वजायत्रिगं महायथयादाविहियन्मि ॥ उक्तिपयाद ६ न्या ४
नृत्रवति ॥ ७६ ॥ नृत्रध्वजायत्रिगं महायथयादवनिर्ध्या ७ नृत्रलियमानानिर्कं कृत्वा ॥ ७७ ॥

केकयाद॥ यवयं कृशगाहिककृष्णकाहियुविजनि॥ स्वाकृदुक्तिमयायावजगनसत्त्वनर्तिक
 म्मकृर्ग॥ अथमयमयात्रयूषाप्रवमाह॥ नत्त्वयामाखीनथंनस्यनकुवकाहमकर्ममपिद्युया
 उनिर्यमिर्ग॥ नचत्त्वयाधर्मजहृमाकाठामानाशुगा॥ नचत्त्वयाकेरिद्वानातिदियमानानिदृष्टा
 न्मादिगानि॥ नचत्त्वयाकचिन्मुदंशस्त्वयविम्वातिपुदकिहिकृगानि॥ सकथयति॥ अशुद्धा६६३६
 वत्त्यायत्रगावृधधर्मसंध्ययजिवजिग॥ नकथयति॥ नह्येवत्कर्मरुपं कनूरवस्य॥ समेयमया
 त्रकेनायन॥ यमस्तनाह॥ यत्रगानित्वाउयनामयति॥ अथस्यमात्राकथयति॥ जकुरुव

न॥ कर्मस्त्वमित्यदणयति॥ अथमयमयूषा॥ नित्वाकाजसंमदानत्रकदियंति॥ किंस्वावेकं
 गकिर्गर्गकाजविध्यनिगदयिजिवति॥ इदितियगर्गकिर्गर्गकायविध्यनिगदयिजिवति॥ स्व
 मियजगतिहर्गकायविध्यनिगदयिजिवति॥ यदाकाजन्नकुर्वन्तिनदाजन्निस्वदामध्यदियमिद
 गविकाजन्नकुर्वन्ति॥ नगुर्गनफायागुणमुखविस्कर्ण॥ दद्वर्गस्वयामासुमपिननानिविधि
 र्यन॥ गात्रुनिविस्कर्णकंथमपिगात्रुमपिद्वयमपि॥ अन्वल्कनानिपुणपुणयमानानि
 सर्वर्गकार्यदद्वर्ग॥ प्रवमदानाज॥ नकश्चिन्मात्राविध्यनियंताक॥ नस्माद्विगमदाना

जयन्ननयूधकंयुं नवंसुन्ननमिकाधर्मदधानाकृता ॥ अथ वलाकि नञ्चप्रवाधिसत्त्वाम
सासत्त्वावत्रिमनदवाचनं ॥ मिथ्यास्यदमसाजाज ॥ अजमिअरगवन्यमहाविहाप्रद्यमसासन्नि
यागाएवश्वमि ॥ नमोन्नवजाकर्मञ्चजननस्ययउषणष्टा ॥ अमकवत्रह्मनानावह्मिनिलयिन ३०
लोहिताविना ॥ नस्तुतिकत्रजगवह्मिजत्वायविअरुवस्तथजगत्स्ययत्रगाववक्तिता ॥ नदागंध
वानाजयकात्राकसात्रसूत्राजत्रुजकिन्नजामसाजजमनूयामनूय्या ॥ सनियमिनाअन्यकानि
वाधिसत्त्वजगानिजनियमिनानि ॥ अथगवाधिसत्त्वानिमध्यजजनगज्जनामवाधिसत्त्वउक्ताया

सनादकासमर्कनासर्गकत्वादकिनजानर्महुजयथियायुमिष्टाय ॥ यनरुजवास्तनाअलियध
मरुजवर्गमनदवाचनं ॥ कृताएजवन्नस्ययज्जगर्हमिस्म ॥ ॥ रुजवानाह ॥ नृषकुलयुगाव
लाकि नस्वलावाधिसत्त्वामहासत्त्ववलनसुप्रत्युस्यरुवनविद्वज्जितकाइमिजस्ययज्जगर्हमि
स्म ॥ अथगजनगउक्तावाधिसत्त्वारुजवर्गमनदवाचनं ॥ कृतायायनयज्जगत्स्ययमदमवलाकि
नस्वर्जवाधिसत्त्व ॥ रुजवानाह ॥ नृषकुलयुगुं देवागर्हमिद्वलाकि नञ्चप्रवाधिसत्त्वा
महासत्त्वायदावलनसुप्रत्युस्यरुवनाहि ॥ ४ कृताष्टातदाअतवनमहाविहाजदिकानिव

व्यवर्था नियतंति ॥ दिव्या नियमक वृत्त भूतानि यत्र मग्न रति याति ॥ अलं काल भन सह सादि
 युव लं विना निम्न कादा न भन सह सुयु लं स्थितानि ॥ का ॥ शिक वसु सजी वल युल स्थिता
 नि ॥ लाहित दधु नि सुवर्ण मूल यय त्रानि ॥ अने कानि यव वृत्त भूतानि ॥ अने कानि का वृत्त ३६
 व्या नि ॥ अने कानि यव वि ज्ञो भूतानि यव यत्रिय हृति यत्र मग्न रति याति या इह ता नि ॥
 अथ गगन गं उरु वा धिसखा र ग वर म न द वा र न ता ग वृत्ति र ग व वृत्त ला कि न ग्ध आ वा धिसखा
 महा सख ४ ॥ र ग वृत्ति ना ह ॥ नृ व क ल य नृ न ना वे ल न स र्वे नृ स र व ना सि यु स र म आ ली ॥ को जा
 वा

मू मि वि श्वं नृ नि ॥ सै स नृ वा व र न म य वि वि य द स ॥ उ न क न दू उ र यं द्रा दि यो न य ह्ना य न ॥ व न द
 ना म वि ना म नि त न स व न ग्रा व र स क नृ न ॥ अने कानि यव ना क स व न सह सा नि न स्मि वि य यु ति
 व ज नि ॥ अदा व ला कि नं ध्व प्र वा धि स ख ॥ य दि स ति ॥ न दा ह द्यु म् दि न द द या म् र व ति ॥ अथ व ना कि नं
 ध्व प्र स य नृ स क्का व ति ध्व वि ला या द या ॥ य नं नि स म्मा य य ति ॥ अने कानि स र्व वि ज्ञा न न ल म न्द्रा
 न मा ध का ना ह मो वि द न नि ॥ स क थ य नि ॥ अने कानि स र्व यु लि या कानि क र्क या नि ॥ स नं र्क ना क
 से नि ला दि य स र्व नृ न म य सिं हा स न वि अ मि न ॥ न न स र्व य क ना क स ना ध र्म अ य नि ॥ अ द व नृ र ग

वकाकात्रहृक्करुस्यमहायानसूत्रेणत्रत्राजस्यचक्रुषादिका^मयिजथ॥ यंयुग्यनिधजयिष
नि॥ वाचयिष्यनि॥ ययवाय्यनि॥ यवहृयिष्यनि॥ यानिजप्रमनसिकत्रिष्यनि॥ गवामिदंयु^कध
स्कंधसंज्ञदत्तारविष्यनि॥ गद्यथ॥ यितामकूत्रयूगाजकमयायजमादजजस्यप्रमानमृणहिकु
नरुक्त्रयूगाजकमयाकात्रहृक्करुस्यमहायानसूत्रेणत्रत्राजसंयुधैकंन्यजनयिर्नु॥ गद्यथयिता ३९
मकूत्रयूगाजकमयासमृत्तुस्यैकैकमृदकविन्दुजनयिर्नु॥ नरुक्त्रयूगाजकमयाकात्रहृक्करुस्यम
हायानसूत्रेणत्रत्राजस्यचक्रुषादिकामयिजथया॥ युधैकंन्यजनयिर्नु॥ गद्यथयितामकूत्रयूगाडा

दशजगन्मन्दिवाल्लकायमास्तथाजगत्तर्हन्॥ समूकैवकाडादजकल्यानेकस्त्रानेधजयसिवज
विन्दुयाजगयनाजानमन्तुपुत्रयहैवर्चयलिल्लाजे॥ युधैकंन्यजनयिर्नु॥ ययवाय्यनि॥ यवहृयिष्यनि॥ यानिजप्रमनसिकत्रिष्यनि॥ गवामिदंयु^कध
वम^कधज^कधैकयगाकारि॥ गद्यथमगा॥ युधैकंन्यजनयिर्नु॥ नरुजकवैकिपुमानमृण
हिकु॥ प्राणवाहमकाकिगमान्धकात्रविहजामि॥ गद्यथयितामकूत्रयूगाजकमयाकात्रहृक्करुस्यम
हायानसूत्रेणत्रत्राजस्यचक्रुषादिकामयिजथया॥ युधैकंन्यजनयिर्नु॥ गद्यथयितामकूत्रयूगाडा

तत्र नाजस्य वक्ष्यदिकाया मयि जायता ॥ यद्यत्कथं ॥ न चान्यथा मया न दृश्यते मया सत्यम्
 पु संक्रामन्ति ॥ त्वमवक्ष्यस्व का ननु कुरु स्य यद्यत्कथं मया संक्रामन्ति ॥ अथ गेयं नाक सा जेव
 आकिं न ज्ञेयं वाधिसुखमगदवाच न ॥ यस्मात्का ननु कुरु स्य महायानसूत्रं तत्र नाजं त्रिषा ययि
 यन्ति ॥ न वा किं दृष्टं यद्यत्कथं ॥ एवमि ॥ स ज्ञात ॥ जेयमयं न कुरु यद्यत्कथं यद्यत्कथं ॥ य ८०
 का ननु कुरु स्य मासाया नसूत्रं तत्र नाजं त्रिषा ययि नो अयं नाजिनि धर्मैकं स ह मानि लिखा
 यिना निरवन्ति ॥ न ना ज्ञा ना एवमि च कुर्वन्ति न सुद्विषं ज्ञेयं ना एवन्ति ॥ न वा स ह मया ग्राह्यं विना
 सूत्रा एव

एव नाज न विना यत्र स न्ययमिदं काना ज्ञेयन्ति ॥ य स न न ॥ यत्रि शुद्धं का ननु कुरु स्य महाजा
 नसूत्रं तत्र नाजस्य नाम मन्त्रं जन्ति ॥ मन्त्रं नो दृष्टं न स मा त्रिकान्द्र ॥ स्वात्य त्रि मन्त्रं ॥ आ
 मि ज्ञा या धिम ज ह्म क य लि द व द् ॥ स्वको मन स्या या या सा य त्रि म्का एवन्ति ॥ यत्र य गाय य
 द्यन्ते ॥ ननु ननु जा नो जा किं स आ एवन्ति ॥ न वा च का य ह्म जिर्वच न्य नर्ज स्म एवन्ति ॥ नि आ त्य
 ल ग दि ना म्खा एवन्ति ॥ य लि य द्दु ज्ञा ग्रा ज्ज एवन्ति ॥ महा ना ज व ज य ज स म्खा न ग्रा ज्ज एवन्ति
 त्वमवक्ष्यस्व ना मि कि धर्मं दे ना कृ ना गे व जे क ना कृ सा क वि न्नु न न ज्ञा य किं न ॥ क वि त्स क

गा जमिदु ॥ क विद ना जमिदु लयु गि व्वायिना ॥ ग क थ य नि ॥ ए ज व नि हे व वि ह ज ल मान्य
य क वि ला न उ य ण क ॥ अ सि न व ग मा ध का ज ल मो दि या नि सो व ह म या स्तु या नि कू र्वा म स
व ह म या नि व र्च कू मा कू र्वा म ॥ अ थ व ला कि न ज व वा धि स्तु वा म हा स त्व सा म क ज क सा न न द वा
च न ॥ अ न्य का नि म या स त्व ण ना मि वा धि मा ज्ज नि या उ यि न या नि ॥ अ थ न ज क ज क सा ॥ क ज क वा
ज क सा वि ना य ज वा व सि ना ॥ ग य ज स ज म य व मा ह ॥ ग मि ष गि य्वा क म व ज कि न ज व वा धि
स त्वा म हा स त्वा ध र्म सा क थ क र्ति यि य हि म र वि षा म ॥ अ थ ख ल्वा र्था व ज कि न ज व वा धि स

त ॥ स त्पु सि न ॥ अ थ ग य क ज क सा न द ना ॥ य ष ग का ज क नि ॥ अ थ र्था व ज क न ज व वा धि स त्वा
म हा स त्वा सा न न द वा च न ॥ य नि नि व र्ण य ध य र्च द न ज न वा ज ना ॥ अ थ न य क ज क सा ज व वा
कि न ज व वा स पा दो जि ज सा रि ॥ व दि ला न ज व य का ना ॥ अ थ र्था व ज कि न ज व वा धि स त्वा
मा का ज न र्ति ॥ ग ना क व र व न ज ला क व यु ग हा स क स म य स क ना ॥ उ य स क म वा क्क ह ज य म हि
मि म्मी य न ज क व मि क य स क ह ला ना म क व यु ग हा द जि डा द ॥ सि न स नि ॥ अ थ र्था व ज कि न ज व वा
स त्वा न वा क्क ह ज य न न स क व यु र्म स क स म य स क ना ॥ उ य स क स वा क्क न ज य य न द वा च न

ब्रह्मकृतं जहं हि वृत्तं किं ॥ अथ सद्धवयुगां नृदं नमो नदवाचनं ॥ नचमवाचनं नकिंचित्सर्वं वि
 दं ॥ ब्राह्मणं नवाचनं जवस्यं त्वया माकिंचिद्वागवां ॥ अथ सद्धवयुगां विमानं युविस्वराद्युनिपुत्रं
 वकिं नृमात्रं याध ॥ दिव्ये मसाहे जने लोका नि यत्रियुहं नि ॥ जन्मा निचराद्युनिदिव्यत्र सत्रसो
 जमयं नो मासात्रं पुत्रियुहं ॥ वामयार्धं विमानस्य वक्राहं जन्म ॥ यत्रियुहं ॥ अथ सद्धवयुगां चिन्ता
 मायकं ॥ जवस्यं मरुत्यां च वा जस्तिगयं मेदुजिलकिमनृपा ॥ का ॥ अथ ब्राह्मणं जगदुपाकं ॥ युविस्व
 ब्राह्मणं सत्यं नवाचनं विमानं युविस्व नदिव्यत्रं ॥ पुत्रियादिनं ॥ दिव्ये जन्म ॥ पुत्रियादिनं ॥ दिव्ये जन्म

सत्रसाधनप्रयोगे जादा प्रेक्षा जिग ॥ कुत्वा वस्यसि कात्रमन्त्रं नृथसं दवयुगलं वाक्कनमनदवा
चन ॥ वाक्कनममायाहस्यास्वमाणा ॥ वाक्कनमाह ॥ ऊगवत्रह्मममहाविहात्रादहमागन ॥ अ
थसंवयुगलसमगवाचन ॥ किञ्चिदिह्याहमि ॥ अथसवाक्कनमदवयुगलमनदवाचन ॥ साहमिजमि
त्रमदिया ॥ दिव्यमनिजनेयत्रिखसितायत्रिष्वहिनादिवेकल्यटके ॥ मनात्रमादियेयनियुद्धं व
मिविविधमिष्टिजनिदृश्यं ॥ विविधमिष्टिजवर्णा ॥ दक्षिणियादृश्यं ॥ विष्वक्वदसुथाजगत्या
न्याकानियातिलाकनिदृश्यं ॥ एवंसात्रमनीयादवयुगलमि ॥ अथसं दवयुगलसवाक्कनमनदवा

[illegible]

मन्त्रयमहि निष्क्रियया जदि कं दृष्टा च न दा ना सां काम चिह्नं मृत्यु न ॥ यदा काम चिह्नं मृत्यु न ॥ तदा
 न स्य सकामय संक्रा का मय संक्रम न द वा च न ॥ एतस्मात्मा कं कृमा य विर्य था व ना ना न वात्मा कं स्वा मि स
 विद्य न ॥ अस्मि काना स्वा मि एव ॥ अज नि काना ज मि एव ॥ अयु जाय ना नाय जाय एव ॥ अद्वि या
 नां द्वि या एव ॥ मन्त्रा ना मा ला का एव ॥ मन्त्रा निर्णे द न ज्ञा नि ॥ या न ज्ञा नि ॥ वज्र ज्ञा नि ॥ उद्या न
 जम नि या ॥ निवृत्ति नि नि जम नि या मि ॥ सक थ य मि ॥ यदि स दि य मा हू यं यदि कृ नू न ॥ ना न्ना हू ॥ क थ
 य क थ य क थ य न वा ह्वा न क जि ष्या म ॥ न न ना सा मा र्था भि क मा र्ज म य द जि न ॥ मा ज्ञ व तु स्र यं

वाधि नं ॥ अष्टाष्टुर्द्विदलमप्ययं सकलात्ममिदलमन्यायं ॥ अनात्ममिदलमन्यायं ॥ नासा
 न्नाकसिर्नात्रागद्वयं न वाधनं भाद्वयं वाधनं ॥ आद्यानचिर्द्विदलमन्यायं ॥ नचकस्यचिजिचि
 न्नायमिद्विनि ॥ अरिजगताधर्मपुत्रवर्णिता ॥ अविद्यासम्बन्धमप्ययद्विनि ॥ नचकस्य ॥ यूनयुधि ४५
 युधमगियागं नकुर्वीम ॥ यादृजं जम्बुद्वीपकामन्यायिनि ॥ अत्र नयामनतादृश्यजिद्विधाव
 यजीवाम ॥ यूनयुधि नान्नाकसिर्द्विदलमन्यायं ॥ तादृजमिद्विदलमन्यायं ॥ अथय्यीव
 लाकिर्नो ज्वर ॥ सिद्धलद्विधावद्विनिर्वाता नस्यामदानगय्यीम ॥ यूनयुधि नान्नाकसि
 मयजकनि

कृमिकूलजनेसहस्रानियुधितसन्नि ॥ गगनावलाकिर्नो ज्वरा वाधिसत्त्वउदयसंक्रमणयाहमत्रयम
 हिनिर्मयद्युधय्ययमाननद्युधय्ययनि ॥ नमावधयनमाधर्मीय ॥ नम ॥ सद्यायकृत्र
 नं ॥ नकुर्वीम ॥ नचयादका नमावधयनमाधर्मीय ॥ नमासद्यायनिनाममन्त्रजयनि ॥ नचिजनि
 अविजसमर्जनसत्कायद्विनिर्वाता नवजद्विनिर्वाता सर्वमनस्रवावनि लोकधकृययना ॥ सर्जधम
 खानामशधिसत्त्वउदययना ॥ गदासत्त्वयलियार्पद्विनिर्वाता नस्यामदानगय्यीयुकान ॥ सर्जध
 हिमुख्युत्पन्नकनि ॥ समर्जधविषयमन्याय ॥ यावत ॥ सत्यान्यथानियुज्ययमानसत्त्वकय

किं विंशतिवर्षाहियुत्रीयुद्धिदिकानात्रस्यचयुगियनस्यच॥ अथवत्राकिनेष्वत्रवैधिसत्त्वामहा
सत्त्वजिनामायुर्दशाययनाहंसत्त्वान्नयुय्यं॥ अथवत्राकिनेष्वत्रविनिधनिवर्षाहियुवविंश
मात्रवध॥ युथममूदकवर्षयदाउदकनसक्तयिगाहवन्ति॥ नदायुग्मद्वियादिषिष्टकानिजस
त्रसाग्रयणानिनेनाहात्रहायलियुक्तीनिरवन्ति॥ यदाहात्रहासक्तयिगाहवन्ति॥ नदाधन्यवर्षप
नन्ति॥ अन्धानिचमित्रगदुत्रकात्रकुत्रदुदितयुनति॥ यदायदागैर्वासत्त्वानाकायः॥ हियायाह
वन्ति॥ नदानदानैर्वासत्त्वानामहियायमन्त्रसिद्धेर्न॥ अथगैमाजधकासत्त्वा॥ युत्रमविस्मयमायुना

नचसर्वयकलानविश्राना॥ विश्रमित्वायत्रस्यत्रभवमाहुः॥ कस्यकवस्यार्थयुलव॥ ननसुखायुत्रुवा
लममध्यजिह्विरुकासहजक॥ कुजोऽययानसिवक्राहृणदधुयुनायदा॥ अत्रकवर्षजगत्सदृशा
युषिक॥ सगैर्वाकथयकिनयुष्माकमन्यदवस्यकस्यसिद्धिदृश॥ युलवाहवन्ति॥ वित्रहिगमवलो
किनेष्वत्रस्य॥ ननसायवर्षकाहृकुमि॥ किदृशकस्यावत्राकिनेष्वत्रस्यगैर्निर्गैर्॥ अथजयत्रुयना
म्यावत्राकिनेष्वत्रस्यकुल्लहावना॥ राविभुजयु॥ अथरुगानादिषाहृण॥ सूर्यगोयदग्मनाच
उहृण॥ रुषायुदुगानान्द्रिहृण॥ ह्यसिगानामहयदद॥ व्याधियुसिधियिन्द्रिगाना॥ वैद्यरुग॥ इरिगना

नासत्ता नामागि न हन ॥ अवि वाद्य नानासत्ता नास्ति वा ह्ययद जक ॥ ॐ दृष्टानि एव तस्य गु दवि
 स्य वा ॥ सखिगास्स सत्ता ला क यतस्य नाममन्सत्रमि ॥ मजायुश्चिमसंसात्रिकं द ॥ खयत्रिवजयमि ॥ स
 धननास्य नृषयूगजाय इव प्राकिने ज्वरस्य सतर्गपुलिगुहं द् वर्यं धूयं निर्या ममामि ॥ य इव नो ५६
 किम ज्वरस्य यजगज्वरु जमम शुजकं क्वमि ॥ न जा जाना एव नि वक्रव किन ॥ सक जत्र समन्ता
 जगा ॥ नद्यथा वक्र जत्र रुक्ति जहं ॥ मद्यि जत्र ॥ मि जत्र ॥ गृह्यु मि जत्र ॥ यत्रि लायक जत्र मय
 सव न व जत्र ॥ ज्वर जत्र ॥ नरि स्म फ रि जत्र ॥ समत्ता जगा एव नि ॥ यवा व प्राकिने ज्वरस्य कयू

व्यतिर्यी गयमि ॥ न स्रजन्धि काया एव नि ॥ यत्र य ग्राय यय न ॥ न न न यत्रि व र्क का या ॥
 हवति ॥ नवसयू लू वा गु द विगर्व कृ न वा न ॥ नाय य र्वद ४ एक स्त के वू ह व न वू य नू
 कु ना ४ ॥ अथ सडी हू य लू व ज न नै ला मि कि ल्ध र्म द स ना कृ त्या स्य क ग र्द नि व स नै
 पु त्पू कु न ४ ॥ अथ व ला कि न स्र जा वा यि स त्या म हा स द ४ न नै वा का ग ५ न दि न ४
 अथ स आ का ग सु वि ता मा य द ॥ वि ज्वर व र्क था ग मा म वि ज का ल न द व ४ सा ५ न य
 व ह न व न विं ज स नू पा फ ४ स्र ज ग कृ न कृ ग व ना द व ४ ॥ अथ व ला कि न ज्वर जत्र न व नै वि
 हा

हा जमनप्रविच्छेद ॥ यावत्प्रत्यतिजनकानिदवनागयकृगन्धर्वसूत्रगन्तुकिन्नजमहा
त्रजमन्त्रासन्त्राजमन्त्रादि। जनकानिचवाधिसत्त्वगतसद्गुणि। चवाधिसत्त्वगतस
द्गुणिसन्त्रियतिनाति ॥ अथ गगनर्ज आवाधिसत्त्वो रगवन्ममनदवावत् ॥ कनमाय ॥
रुगवन्वाधिसत्त्व आगच्छति ॥ रगवानाह नृषकुलपुत्रावला किन्नज्जगच्छ ॥ अथ
गगनर्ज ॥ उक्तवाधिसत्त्वो महासत्त्वसूक्ष्मवर्तिनः ॥ अथवा किन्नज्जगच्छ ॥ रगवन्
नियुदकिंहीकृत्वावाधिसत्त्वविश्वं ॥ अथसकनः ॥ गृह्णन्विदित्वा रगवान्यच्छति ।

अनः ॥ कृत्वा ॥ सत्त्वकुलपुत्रकिंदृगाकर्मरुमिस्रयानिष्पादिता ॥ ननतस्यत्तयव
वर्तिनः सनानेष्टविश्वययनेष्टकालसूत्रो जवाययनष्टरुदसदात्रक ॥ जीमाद
कसदानेष्टगिदुदसदानत्रक ॥ नृषसदानत्रकस्य सत्त्वाउपय ॥ नोक्तवाक्यकर्मव
नि ॥ सत्त्वभयत्रियाककुरुया ॥ कलाजान्नगयासम्भक्तवाधोयुक्तिष्टयुक्तिनया ॥ ॐ हर्ममयासत्त्व
यसियागदृग ॥ अथ गगनर्ज ॥ उक्तवाधिसत्त्वयत्रमविसमयमायुत्र ॥ नचमवाधिसत्त्वहनस ॥ ॐ
दृग्विषय ॥ दृष्टं नथ गगानामिदृग्विद्यने ॥ याजुववाधिसत्त्वहनस ॥ अथ गगनर्ज ॥ उक्तवाधिस

ला इव जा कर्णे ज्वलस्य वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य यत्र न ॥ सित्वा इव ला किने ज्वलं वाधिसत्त्वमहास
 त्वमवमाह ॥ अ न किष्टु ल ॥ सत्राह ॥ नवाह यथा क म्म ध्य अ नान किष्ट ॥ गो यत्र स्य त्रं सा कथा क
 लाह लिख वन व वस्ति नो ॥ जेथ ए ज वा न द्या ल मि ना नि र्द्वि ध र्म स यि तु मा त्र पु ॥ ५८ धां तु कू त्र यु ग ॥ ५८
 यु थ म वा स त्वा न न ह दान या त्र मि ना य लि य त्र यि न र्था ॥ न र्वं जि लं या त्र मि ना ॥ का मि या त्र मि ना ॥ वि र्थ
 या त्र मि ना ॥ ध्या न या ल मि ना ॥ य ह्ना या ल मि ना ॥ य सि य त्र यि ला ॥ ॐ मा न न्ना मि क ध र्म द ज ना
 ह ला ह वि ला व न व वस्ति न ॥ जेथ ना ॥ यु र्ध द स्व क स्व क ह्ना न य प्र का ना ॥ ४ म व वा धि स ला ॥ स्व क स्व क

ब्रह्म कृष्ण प्रकाश ॥ अर्यकात्रय ब्रह्मस्य माहायानस्य ज्ञानलाजस्य युथमानि र्यह ॥ अथ सर्वेषां
 वज्रविक्रि रजर्वन मनदवोचन् ॥ आर्यत एजर्वन वजा किने ज्वत्रस्य ह गयर्व क ने मा ॥ समा ध
 य ॥ समा य न्ना ॥ ए ज वा ना ह ॥ न द थ वि ना म कू ल य ॥ ७ आ का त्र कु लो ना म स मा धि ॥ यु ल क आ ना म स मा
 धि ॥ व ज्ञा ह ना ना म स मा धि ॥ सूर्य यु ल ना म स मा धि ॥ वि कि लि ना म स मा धि ॥ क र्द आ ना म स मा धि ॥ ४ ध
 जा ज्ञ ना म स मा धि ॥ जे र्ज का आ ना म स मा धि ॥ य ह्ना आ ना म स मा धि ॥ द ज दि ज व आ ना म स मा धि ॥ ४
 वि का म नि व त्र ला व ना ना म स मा धि ॥ ध र्म ध आ ना म स मा धि ॥ स म्प दा व आ ना म स मा धि ॥ वि कि लि ह्ना

नामसमाधि ॥ सर्वशोकधनुवदलाकनामसमाधि ॥ कृत्स्नजगो नामसमाधि ॥ अहिनसिजगो नामस
माधि ॥ उक्लिषदूधनामसमाधि ॥ उदवत्रावनामसमाधि ॥ वहुजनपुलिवा नामसमाधि
दवशवननामसमाधि ॥ कल्पद्विषा नामसमाधि ॥ प्रागिहाय्यसदनामसमाधि ॥ युद्धाकुमानासमाधि
नाऊनामसमाधि ॥ अविशि सखयनामसमाधि ॥ अचिला नामसमाधि ॥ देवकूटनामसमाधि ४
अमृतविन्दु नामसमाधि ॥ युलमेधुलानामसमाधि ॥ समुद्रावजहनामसमाधि ॥ विमाननिर्दृष्टा
नामसमाधि ॥ कवविकखलानामसमाधि ॥ निशायत्रत्यलजधनामसमाधि ॥ आत्रुटी नामसमाधि ॥

वज्रकवचानामसमाधि ॥ द्वित्रदजगो नामसमाधि ॥ सिंदविदिठिगो नामसमाधि ॥ अनुरुपानामस
माधि ॥ दममौमैसिनामसमाधि ॥ बन्धोउर्यानामसमाधि ॥ अरुसकनामसमाधि ॥ सगकित्रलानामसमा
धि ॥ विष्णुजिगो नामसमाधि ॥ युलकनामसमाधि ॥ खकात्रको नामसमाधि ॥ असुत्रसनामसमाधि ॥ रवमनाम
समाधि ॥ निर्वीनसनामसमाधि ॥ जहादिया नामसमाधि ॥ रवगायकनामसमाधि ॥ अकत्रकनाम
समाधि ॥ दवातिमूखनामसमाधि ॥ याजकनामसमाधि ॥ युत्रमार्थदर्शनामसमाधि ॥ विष्णुना
मसमाधि ॥ नामयूरुनामसमाधि ॥ सिंदविर्णमिनामसमाधि ॥ आजमनाजमनामसमाधि ॥ दूकिवि

स
रुद्राक्षनामसमाधि ॥ स्मृतिविद्ययासंनद्धनामसमाधि ॥ अविमृकानां समाधि ॥ अयवाहनामसमाधि
मार्जसुन्दरनामसमाधि ॥ प्रहिकृत्रयुगावलाकिनां यथाधिसत्त्वामसासत्त्वसमाधि ॥ समाधिसंमनग
न ॥ गणेश्वरनामविद्वत्समाधिसंगणदुष्टादिसत्त्विकवृत्तमित ॥ अयं कृत्रयुगावलाकिनां स्वप्रज्ययाधिस ॥ ५०
त्वस्यमसासत्त्वस्य ॥ यत्रमयद्यसंज्ञान ॥ वृद्धभंगथाजगतां यद्युसस्मत्त्वानविद्यमान ॥ यज्ञवधाधिसत्त्वस्य
गस्यत्वस्ययुर्वकुलपूजादिसिंहवोनामयाधिसत्त्ववधियुगाद्वता ॥ इदं वत्तनादसिंहलद्विययागसंप्रतिने
युंरुहि ॥ ४ वदिकपूजसंगे ॥ सार्द्धसकने ॥ लात्रेसूटे ॥ विटके ॥ उष्ट्रे ॥ अहिगर्दराहि ॥ ४ पुस्तनपूजमा

आयसिद्धजद्विष्यस्यसिंहोअमनुजत्रनिजमयत्रिवर्तनवृद्धस्यस्यमानसिंहलद्वियमन्याय ॥ ४
थननियूननका नयाउयुगियादि ॥ गदामककुवात्रादुयाक ॥ यष्माकं कनमद्वियसूवायवावाणि
अथवात्रद्वियसूवायवाणि ॥ अथवायवाधियसूवायवावाणि ॥ अथवात्राकसद्वियसूवायवावाणि ॥ क
कुष्माण्डनवमाहा ॥ यत्तुसूदवोआनियसिंहलद्वियसूवायवावाणि ॥ अथगद्यानयाउमूकमवसि
हलद्वियस्यसिंह ॥ सिंहजद्वियनिवासिनिहि ॥ आकसिहि ॥ अकालवायवदत्त ॥ गर्वयानयाउ
विहि ॥ गतवदिकक्यूज्याउदकयमिगा ॥ वाहवात्रनसंवत्सकुमालयध ॥ गदात्राकसिनाय

कसगानिनि॥ कान्तिनिकिलिकिवायमानानि॥ कुमालीप्रयमहिनिताय॥ नदाकुत्रसमिपमन्याका
 उक्तार्थभागकानिदत्ताउदकदित्वाउक्तार्थ॥ ४॥ वस्त्रकियागिवाक्ताहिजहिल्वानिधिदिनुमात्रयु॥
 निष्ठा॥ उचित्वागस्मात्कानादतिक्रमयानेयुदसमसांगप्रम्यकरकसुप्रविष्ठाका॥ विष्ठाभिस्युत्र
 सत्रसाकथकितुमात्रयु॥ का॥ इस्माकम्यायसविद्यन॥ नकथयनित्वासाकम्यायस्यकानम् ॥ १॥
 प्रवसाकथकित्वाकृष्टावतववस्त्रिणा॥ श्रथमवात्राकसत्रकस॥ यत्रवानादत्रन॥ सिलवमा
 ह॥ ४॥ स्वामिकागोस्वामिरव॥ नगनिकाना॥ गनिकाएववद्विद्याना॥ द्विधाएव॥ अत्रयनानालियभा

एव॥ अत्रयत्रायना॥ प्रत्रायनाएव॥ रमाभित्वा॥ इन्नवस्त्रनियानिजसा॥ निदशजहादिकटकक
 यत्रास्रतिकुल्लुगलानि॥ उद्यानत्रमनियानियुक्तजहात्रमनियानि॥ नातित्राकसिहितकैक
 यत्रवष्टहिल्वस्त्रकस्त्रकनिधेजानयुष्टगना॥ याचनासात्राकसिवावद्वतयादस्त्रकियानिधेजानि
 त्वादिर्वत्रप्रयमेनासात्रनसकयित॥ सन्नययित्वाकीतिनुमात्रयु॥ सगर्भमान्वाकनसोखन
 सन्नयित॥ प्रवद्विनियसगदिवसान्यनिक्रानानि॥ सत्रागोसयितप्रवयावत्ययनित्रनिकर्जदसमि
 नदाहद्विस्मयमायत्रानकदाचित्वामयाद्वस्त्राद्युक्तालितमवत्रनिकर्जदसमि॥ नदाभन

स्य प्रया हा प्रकृति ॥ किं का ज न ल ह स सि ॥ सक थ य मि ॥ ॐ ह सि ह ल द्वि य वि वा सि नि ना क सि ता न व डि
 वि ता न ना य क लि ष्य मि ॥ ग दा भ ग स्य प्र या हा प्र कृति ॥ क थ त्व ज ना सि ना क सि मि ॥ सक थ य मि ॥ यदि
 न प्र मि य सि ग दा द कि दाय क लि का ण हिलो ॥ अ नू त्वा वि च य भ ज क ॥ ग गाय स न ज न मू द मू च ज वा क
 मा प्र द वि यु हि न क य य हि न ॥ ग गान का नि व द्धि कु ना नि ल य यि त्वा नू सि नि यु क्रि य नि ॥ अ न व डि व ॥ २
 मि वा न्य मृ ता ॥ यदि व न प्र मि य सि ग द यि मा ॥ ज ज कृ ज ला व मा र्ज नि क ग दा भू ज गु क धा स्य सि
 ग दा न स्या क न भा ह जा ना ना म नि डा न्य ला ॥ अ थ स वा धि स त्व ना रि का प्र स म य ग स्या ना क स्या
 व र न २

ग का ण दू ला य सं प्र सि न ॥ व न्दा व र स ख र्ज स जि दू न मू य ण द्वा नू वि च य न न द कि न य न्त्रि का ण
 हिलो स म्प्र सि न अ नू य व द्धि य स न ज न मू नू या का ॥ स म क न य त्रि ण म मि न व द्वा ना वि ग वा क्ता नि
 स म न य स्य मि ॥ अ थ ग स्या ना य स न ज न मू ला ग क य क द क्ता स गे वा नू द्ध न ना म या गे वा मू ला स ना
 अ क ४ कृ न ॥ ग ना भ व नि क दू प्र या क थ य मि ॥ य ग ख नू म ला सार्थ वा हा जा नि या द य ना क सि हि
 ना य स न ज न प्र क्रि या ॥ ग दा दि ने दि ने स य नू र वा ना ण हिलो ह क य मि ॥ ग मू र द्ध यि नू ला सि न्य
 ने वा य स न ज न प्र क्रि यु नि ॥ ग ग स त्व ग य व वे सि न ॥ ग दा ह र भ क द क द व नि क य न ज व द कि

धर्मपन्थलिका गृह्या नूविचत्रन् त्वलिर्गज क्कामि ॥ ग मा इहं पुविष्ट ॥ अथत्रतिकलम गदधवन् ॥ दृष्ट
माहासाथकसामगवचनं ॥ उज ग क म या दृष्टं दृष्टा कं सत्यं सा कथं कर्तं ॥ गदाभयुया हात्रक ग ॥ कउ
पाया साकम ॥ अथसत्रतिकम गदधवन् ॥ अस्मि म महा सार्थना हा था था ॥ य ना पा य न सिं ह ल द्धि या ॥ ३
त्वा सिं ह मा हा ॥ अम्बु द्धि य नि ष्ठ क सि य न प्र द जं म्बु द्धि य सु य सि ग दा भ ग स य या हा त्र क ग ॥ मा ग्ज
भ द ज य ॥ य न मा र्ज ण हं सि ह त्र दि या न्य न जं द्धि यं म नू वि स त्रा सि ॥ अथ सत्रतिक लो मा भ ग द धा
वन् ॥ अस्मि न सि न्न व द्धि य म हा म हा स नू द गि प्र द व वा त्रा हा ना ना य त्रा जा हि न दि ना नू क भ क ॥ स

च वा त्रा हा ॥ अथ त्रा जा सर्व एव ना म भा य धि कृ त्वा अ व द्धि वा त्रा का रु त्र आ व र्त्त न य त्रि व र्त्त हा क त्रा गि स
आ व र्त्त न य त्रि व र्त्त नं कृ त्वा त्रि त्र य क्का त्र य मि ॥ प्र क्का त्र यि त्वा पु र्हा या त्र क्क त्र नं ॥ क या त्र ज मि ॥ क या
त्र ज मि मि ॥ ल व क्क वी ॥ अरु द व या त्र ज मि मि ॥ प्र व सा क था कृ त्वा स त्रा क सि स त्रि य म्ज भ सा र्क ज य
न ॥ न व य मि वि द्धा सा क थ य मि ॥ आ र्य द्धु क थ न ग त्रि त्र णि ग ल त्व नं ॥ ग दा मु या म्ब वा वा र्द पु या हा
त्र क ग ॥ व हि न ग ल स्या चा त्र य म्ब व न नि ष्ठा कृ त्वा ॥ ग मा भ ज त्रि त्र णि ग त्र स र्ग ला द्ध त्र नै यि क यि ग
स र्य स्य त्वा त्र्यं ग म न का त्र स म य ॥ उ क्क य गे वा व हि क द्धु त्र वा नि मा ला व म मि ॥ आ ग क्क नु र व क्का

वहिन न जत्र स्य गच्छाम ॥ म गे सर्व सदीना ॥ समष्टि सर्व वहिन न जत्र स्य संपुगि सुता ॥ गव वहिन
 जत्र स्य गता ॥ न काने विष्णु सा कथं कुरुमात्रा ॥ कस्य किद जिह्या स न दवेति ॥ कचित् कथय
 ति ॥ जति स्त ह म कुरु ॥ कवि न कथयति ॥ मम दिव्य जत्र स्य स्य अयमे जा हा त्रे ॥ सध प्रयति ॥ कवि ज
 ग् कथयति नाना धेव स मध प्रयति ॥ कवि ~~न~~ कथयति दिव्ये भोलि कुरु लस ~~न~~ ज्दा मानि ध
 प्रयति ॥ कचित् कथयति ॥ ना स्ति स्मार्क काय दा ह ल्य म ॥ कचित् कथयति मम वि विज्ञा नि च न्द्र न क
 र्यूल कलु लिका नि ध प्रयति ॥ न व गे ज कथं कुरु ॥ गदा गे वा स्व वि कुरु यत्रा ना यु या हा त्रे क प्र मि ४

न यथा कय क मि दय दय जा क सि हि ॥ प्रस का ॥ ग वि द्यं ^{लि} ~~न~~ न व ज्ञा ह ~~न~~ स ह म हा सा र्थ वा ह
 जा क सि हि ह ल दिय नि वा सि नि ॥ ग दा गे वा म या यु या हा त्रे ॥ कुरु ॥ स र्थ स र्थ वृ ध क र्म स र्थ ह य म य मा
 नृ वा जा क सि ~~न~~ ॥ जे थ गे व ति क य नृ वा ४ क थ य नि ॥ का ३ स्मार्क ग मि ४ क ४ पु त्रा य न ॥ ग दा गे वा म
 पु हा त्रे क र्म ॥ जे थ वा क ग मि ४ त्र य त्रा य न ॥ व ति क य नृ वा क थ य नि ॥ उ पु द ज य गे वा स र्थ वा ह ॥ जे
 ह ने वा नृ व मा ह ॥ जे थि य वा क सि ह ल दिय वा ला हा ना मा ज वा आ स व हि न दि ना नृ क म्प क ॥ स र्थ ज वा
 ना भो व वि म्प क्का स व ह्म वा त्र का क न ज वा व र्म न य वि व र्म न क प्र मि ॥ क ला व स नि न पु क्का उ यि ला मि

सिपुयाहात्रमि ४क ४यात्रजमि मि ॥ गगुसाहिवक र्यवययात्रजमीन ॥ अथमवहिकयत्रवानुनं
दवाचन ॥ कनमसिद्धिने जका मावय ॥ सपुयाहात्रककुमात्रय ॥ ननियदिवस ॥ वय्यजगय्यय
त्रमनसंमलकंय ॥ गकियाकात्रकलायनत्रवगनत्रजत्रयविष्ठा ॥ गंस्वकस्वकंनियसनजगा ४
नंताहि ॥ नाकसिहि ॥ सम्लाषिता ॥ अनाक्रानसूदृष्टानान्यद्वानत्रमत्रिया नियद्विप्रिदियानि ॥ सु ७७
कथयतिनयमकिक्किदृष्ट ॥ अथसत्राकसि ॥ गमगदवाचन ॥ आर्ययुव विविधन्यस्मिन्निहलद्विष
उद्यानत्रमनियानि ॥ विविधयुष्यपलियदृष्टानि ॥ जनेकानिचयद्विप्रिनिजतानियद्विप्रिनित्रमनिया

नि ॥ सपुयाहात्रककुमात्र ॥ यध ॥ ननियदिवसयतिनसंमलत्रककुय ॥ उद्यानस्मिद्विजना
वायुसकुमियामिगानिचविविधनियद्विप्रिनित्रमनियानिसनानियद्विप्रिनित्रमनियानि ॥ ना
नि ॥ रविविधनियद्विप्रिनिजहिलाजराणमिष्यामिसाकथयति ॥ आर्ययुव वक आसिह ॥ गगसुयासं
वलमनविचिनिन ॥ अथवात्राकस्याजानकिर्गेयो गनास्माकंजिविगानत्रायकलियनि ॥ ००००००
सत्रिमनविचिनिउद्विहवनववकिन ॥ गस्यगयायुतिगयुतिगान्याहात्राथनयुदगानिकुक्काव
उक्कस ॥ निन ॥ साकयनाकसि ॥ आर्ययुव किंकात्रनमृक्काजकात्रिर्ग ॥ अथसनामगदवाच

न॥ स्वकं अहित्राणां जातु द्विय कामयथा ॥ सनाह ॥ किं कथा व्याख्यायुः स्य क्रियेन विषयनास्मिन्नव
सिह्नद्वियविधिष्वन्यत्र ज्ञानियान ज्ञानिवक्ता ज्ञानिविधिष्वन्यत्र मद्ययानि ॥ विविधं सुखमन्
हवसं किं जन्म द्वियुः अवस ॥ न दाहं हृदि शिवेन व्यवस्थिता ॥ सगदिवसमतिक्रान्त ॥ द्विगियदिवसयनि
गान्याहात्रा निसंखलमन्युदकानि ॥ सर्वानि गति सति कृणानि गति यदिवसपुत्र्युवकालसमय सर्वमसु ॥ ५
युक्तिगा ॥ न च वदितेन गत्र स्पनिष्क्रान्ता ॥ निष्कमिता क्रियाकारं कर्तुमात्रं द्या ॥ न केनचित् स नत्र वसिंहल
द्वियानि प्रिक्रियार्थ ॥ त्वनिर्ग त्वनिर्ग ज्ञेयाहित्रा न कथं ॥ ष्ठं दृष्टं क्रिया कालकला सप्रसिद्धा ॥ त्वनिर्गमवद्

लघुवज्रकृति ॥ अनन्तं सर्वं दयसु सत्कलहा ॥ अत्रात्रा नान्याय ॥ यावत्पथनिवात्राहमप्यत्रा
जानं सर्वं अत्रा नाना भोषधिमाहादयनि ॥ ज्ञात्वा दयिला सर्वं कृता नृकास्तत्रावर्तुनयत्रिवगनकत्रा मि
द्विलावज्रनिर्गु कौतुयमियदा सत्रिप्रयु कौतुयमि ॥ गदा सिंहप्रद्वियं कलमि ॥ त्रिनिवाक नियवाहा
त्रमि ॥ कयात्र जममि ॥ कयात्र जममिक ॥ यात्र जममि ॥ अथ गवनिर्गु कयत्रया ॥ नवसाह ॥ वययाल
जमिन ॥ अथ सर्वालाहा ॥ अत्रात्रा नाना दवावत ॥ शवतिकयत्रया यदा सत्रिप्रयु कौतुयमि ॥ न
यवार्क कनविनिहल द्वियानि प्रिक्रियार्थ ॥ न केनचित् स नत्र वसिंहल ॥ नवसाह ॥ यात्रिगवय ॥ न

गोदृजक्रियाकारकत्वा ॥ गदाहृयुधमगत्रमात्रुद ॥ यवात्यक्षरभगानिवजिजानियवाज्रात्रुध ॥ गदा
नेहिरुजद्वियनिवासिन्यात्राकसि ॥ कित्रकिजायमाना ॥ वृष्टगाधवमि ॥ प्रदतिकप्रुनकप्रुहविला
ये ॥ गगर्हप्रुदहासर्व ॥ उलायुमिनिवत्यनिसिक्तिरुमात्रुघा ॥ यदागेत्रिक्कगगदागेत्रधमखाउदक
यगति ॥ यदातयदकयगतिगदात्राकस्याक्रियाक्रियात्याद्यमानासुलाक्यमि ॥ गदाहमकाकिजम्बुदि ॥ ११
यभवयुल्लुणग ॥ गदामित्रस्यसमिधवात्राहमज्जत्राजतिप्रुदकिनिदुत्यनमेवप्रुक्राना ॥ धरात्वेरु
सम्युक्तिग ॥ स्वकियनिवेणनमन्प्रुर्वनान्प्रुपाय ॥ गदाममागायितप्रोकहृयप्रिष्यर्कप्रुदिकुमालधु

रथावाद्यनयुगत्रानिविस्तुठिगानि ॥ गदप्रुमात्रुधोनेमोमागायितप्रोकथयग ॥ जिबुयउल
मन्प्रुपाय ॥ नास्माकंदुवेहाकर्णजत्राकात्रजष्टिरुगो ॥ धकात्रमाजसायदजक ॥ मलहाकात्रयिहृदा
ना ॥ मगस्यसनाथाकत्रनिय ॥ गितत्रावागानामयप्रुस्यप्रुक्रादकत्र ॥ प्रुगोवरनमागायितप्रोवा
र्याग ॥ वृष्टजमयासर्वहिवत्रनविस्तुहिनसाथवाहवाधिसत्वहृगेनद ॥ ४४४मन्प्रुवर्ग ॥ गद्यथायिना
मसर्वहिवत्रधुविस्तुमिवालाहकमज्जजहृगेनाजवत्राकिनेज्जत्रनहागादृज्जहृमहृर्या
समिभाकिन ॥ गद्यथायिनामसर्वहिवत्रनविस्तुहिनमकमयावत्राकिनेज्जत्रस्यदधसस्त्रात्रज

हयिर्कुं ॥ अल्पमात्रमिदं साकथ्यकर्म ॥ न केकत्रामविवत्रस्य ॥ तद्यथा विनामसर्वदिवत्रदविष्क
रि न ॥ सुवर्हनामत्रामविवत्रनगुनेन कानिजन्धर्वकोटिद्वियुगजगत्सहस्रानियतिवर्तमानि ॥ तत्र
ससात्रिके द्द ४ खनवाधनयुत्रम दसोय्यनसुनयितारवनि ॥ दिय्यादिवस्वनिप्राद्वरवनि ॥ तत्रानव
नेनाज्ञादवाधने ॥ नवनेभादनवाधन ॥ नवनेद्वेषदवाधन ॥ नवनेज्ज्यागविर्कुमृत्यादयनि ॥ नवने ७
नेषासिंसाविर्कुमृत्ययने ॥ तसगतसमिगमार्यास्त्रीजिकमाज्जस्यवनिगद्वर्गनि ॥ सगतकालन्धस्मी
रिका ॥ किं ह्येवनि ॥ तद्यथा विनामसर्वदिवत्रदविष्क ॥ सुवर्हनामत्रामविवत्रद्वरासनामचिन्ता

मतिजनयनागजन्धर्वजहियायकिन्तयनि ॥ तदागत्रामहियाया ३ सुस्थिति ॥ तदासुवर्हनामविवत्रा
दतिक्रम्यकृष्णनामत्रामविवत्रनगुनेन कानिजन्धर्विकानिनियुगजगत्सहस्रानियतिवर्तमानि ॥ केविद्वकदि
ह्ना ४ केविद्यविह्ना केविगुयह्ना ॥ केविचक्रुजह्ना ॥ केविल्यज्जह्ना ॥ केविद्यउह्ना ॥ तस्मिन्त्रा
मविवत्रनूयमयीह्मि कनकमया ॥ सुवर्गानूयमया ॥ अजगुय्यनजगयविना ॥ सयसयनियत्रवने
इतिगिसहस्राज्जिह्मियुतिवर्तनि ॥ तवाक्ज्जिह्मिद्वज्जयनद्विकल्पवकाद्वधनलादिनदधु
सुवर्हनाययगननायुगविना ॥ न केकत्रामविवत्रवगत्स ॥ यस्मिन्त्रा ॥ केविद्वद्वारुमयनेनवात्रिध

एनामध्वयमागृहदृष्टानि वस्तुनि ॥ द्रियादूर्ध्वनि ॥ सुखिनास्तत्त्वाय कात्र ह्युक्त्वा स्यात्माहायानस्य
 प्रत्नत्राजं साव्यनिलिखिनि ॥ लिखाययिषिनि ॥ अत्रयिष्यनि ॥ वाचयिष्यनि ॥ यत्रेनायस्यनि ॥ यानि
 अश्चमनसिकेलिष्यनि ॥ नैसुखिनास्तत्त्वाहवनि ॥ यकाहुक्त्वा स्यात्माहायानस्य प्रत्नत्राजं यकाहुक्त्वा
 मयिलिखाययिष्यनि ॥ ॐ हंससात्रिर्नंदनयस्यनि ॥ नरनं चन्द्रात्रयकृत्तृजयने ॥ नगदि ॥ ६०
 भदियाहवनि ॥ नरनं प्रगकृत्तृकास्तनाव्यलग्नृजलकाष्टाश्वसत्त्वा ॥ कश्चिनश्च जने नरनं वा
 काययाधिसुक्रमं ॥ अंशुवजवायिषिर्नन्दियाहवनि ॥ जधलजवात्र साधूकात्रमदाग ॥ साधूसा
 सासर्वविद्वजघविष्कर्मिन् ॥ यस्तुव ॐ हंसयुक्तिरानकलायनकानिर्नवनागयकृजन्धवीस

[illegible]

वर्धुषुल्लगयासमवाजनादियात्रकात्रविरुषिगजत्रिजात्रयसत्रसायुगिस्यदिने ॥ गदृण ॥ पुत्रमण
 रना ॥ नचगात्रादखनवाधक ॥ नचकषदखनवाधक ॥ नचमादखनवाधक ॥ नचगासाकायकिक्लि
 नखकदखसविद्यक ॥ गजगन्धत्रवकन्या ॥ तिका लमवलाकिने ॥ जस्यनाममनूरुमत्रि ॥ यदात्रिका
 लमनूरुमत्रि ॥ गदागासासर्ववमुनिप्रादुर्भवति ॥ अथसर्वदिवत्रदविष्कृष्टिहजवगनमनदवाचन ॥ १
 नमिष्याम्यहमृजवगानिआमवियत्रादिदुष्टकाभाह ॥ रजवान्नाह ॥ जगृकाहृदययुगत्रामविवत्रा ॥
 यथाकाजधामुत्रजगृका ॥ इत्यस ॥ प्रवर्णवर्णकुलयुगत्रामविवत्रा ॥ जगृका ॥ जसमना ॥ गेखत्रामविवत्र

१

हसमनहृदावाधिसुखामहासुखसुखालामविवत्राहृदादशवर्षादियुत्रिगमनानचनगानिआमवि
 वत्रादिदृष्टाति ॥ यस्येकेकत्रामविवत्राहृदिर्नवधजगनननायिनदृष्टा ॥ याजवान्यवाधिसुखरुना ॥ अथस
 र्वदिवत्रनविष्कृष्टिहजवगनमनदवाचन ॥ यदाहजवन्मनहृददवाधिसुखनमहासुखननदृष्ट
 दादशवर्षादियुत्रिगमनि ॥ नचननगानिआमविवत्रादिदृष्टानि ॥ जस्येकेकत्रामविवत्राहृदिर्नवध
 जगनननायिनदृष्ट ॥ गदागयात्रामविमवजानानको ॥ इत्यस्यि ॥ किगमिष्यामि ॥ जगृका ॥ जसमना
 यिनस्यत्रामविवत्रादिदृष्टमान्यनयत्रिमाणयमान्यनवदशनसवदिवत्रनविष्कृष्टिहजमायाविजगृका

सूक्तयवमनदस्य न द्विज ऊना इत्युयिमहात्रयिण न गदमुकुज काठिज न गदमुकुज ॥ ५ कादजमि
 य मसायाजि निवाज तमिववस्तिन ॥ सख ननामयाहू ॥ एवगाजकाज ॥ कृत्रिदा इनादसियाहू निद्विज
 सुथाक्याहन ॥ सर्वद्वम्यय ॥ ५ वभव कृत्रयुगव जाकि नोव ज न ऊ त्वन के विद्वथ न न स्य ज्वलावका ६ २
 यनथाजना नभवम्यस्य नि याज्यवसमनरुद्राया इत्यववाधिसत्व ॥ ऊचिन्त्याय कृत्रयुगवलाकि नोव
 यावधिसत्वमसासत्व ॥ यामिहाय निसम्यपदजयनि ॥ ऊन्यकानिचवाधिसत्व कामिनि युगज न समाहि
 यत्रियावयनि ॥ सत्वा ज्वना वाधिमार्ज ॥ युगिष्टाययनि युगिष्टाययित्वा सखावगिला कधमनूज कुनि ८

ऊमिरुथनथाजना स्या नि क धर्ममनूज हामि ॥ ऊथसवत्रतिविष्कृमि गवर्ग मगदवाचन ॥ कनायाय
 नरुजवन्त्यज्जाम्यदमव जाकि नोव ज ॥ एजवानारु ॥ यदि कृत्रयुग वृद्धेवसंहा जा कधमनुमाज कुनि
 समदजयवदनाययुय्यासयैनी ॥ ऊथसर्वद्विजवदविष्कृमि एजवनमगदवाचन ॥ ऊनूजानाम्यदंर
 यवानव जाकि नोव ज जा कु नि ॥ एजवानारु ॥ यदा कृत्रयुग सत्वयत्रियाकांरवमि ॥ कदावला
 कि नोव ज वाधिसत्वमसासत्व ॥ यथमगत्रमाज कुनि ॥ ऊथसर्वत्रतिविष्कृमि वाधिसत्व ॥ कत्रकया
 लदलाविर्लुयु जायवस्तिन ॥ किंसयायायविनात्रकालजिविगे नावला कि नोव ज वाधिसत्व एनाहम

गमप्राकमार्जस्युल्लिखन ॥ अथ सर्वेति वलनविष्कम्भिवाधिसत्त्व ॥ यन्नत्रयित्गवजर्वन्ममगदवाचतु
कगमस्मिन्कात्रलजवन्नवलाकिर्गज्वत्रज्जज्जुक्ति ॥ अथलजवानाह ॥ ॐ देववनं ॥ अत्राहसमिदव
हसति ॥ अकात्रसकलपद्गुवलाकिर्गज्वत्रस्यवाधिसत्त्वस्याजमनकात्रमय ॥ गद्यथायिनामकूत्रयुग ॥ ६३
गालासविदवादवति यीमगविदनाम आमविदत्र ॥ गगान्यकानिदवयुगकाटिनियुगजगसहस्रानियु
गिवसति ॥ कचिककहमिका ॥ कचिद्विहमिका ॥ कचिकिहमिका ॥ कचिचक्रहमिका ॥ कचिर्यंकहमिका
कचिट्ठयुहमिका ॥ कचिगस्यहमिका ॥ कचिदष्टहमिका ॥ कचिन्नवहमिका ॥ कचिद्विंशहमिका

का युमिहिना कविस्त्वा मसास्त्वाहवति ॥ गद्यथायिनाम सर्वेति वज्रहाविष्कम्भि गस्मिन्नमृत्तवि-
आमविदत्रयविद्युर्वना ॥ सुवहृन्मयमया ॥ नृकेकयुर्वन ॥ यद्विषयि यजनसहस्रानि ॥ कथं एतदवायु
वृणानात्रवनवति ॥ अजसहस्रातिदिव्यसुवहृन्मया षड्विंशति या अर्वा अर्वा कचिदेकचिकीत्यादिका ॥ वा
विसत्त्वायुगिवसन्ति ॥ नृयुर्वन जाजयन काहिर्गन्धर्वकाटिनियुगजगसहस्रातिदिव्यमिवसन्ति ॥ य
नृनामविदयसकर्मसमिन्निर्नादिनहृत्तत्रयन्ति ॥ गद्यथायिनाम सर्वेति वज्रहाविष्कम्भि न गस्मि
अमृत्तविद्या आमविदत्र ॥ इनेकातिविमाहकाटिनियुगजगसहस्रातिदिव्यममिन्नयुगि यविंशति

ना ॥ गस्मिन्नवप्रामविद ॥ नकानियुत्रवगविचत्रातिजनसदृशानि ॥ कश्चिद्विजयमया ॥ कश्चिद्रूपमया ॥ कश्चि
 त्सर्वधूममया ॥ कश्चित्कूटिकमया ॥ कश्चित्पद्मनाभमया ॥ कश्चिद्विलिखितमया ॥ कश्चित्सकलमया ॥ ॐ
 अनिवर्तनयुक्तयुगप्रामविदप्रनिमित्तानि सदृशानि ॥ एतप्रामविमत्रनकानिकल्पवत्काजनकवि ॥ ६७
 दूमवत्काजननवत्कासो गहिद ॥ का ॥ जनकानियुक्तप्रनिजनसदृशानि दिव्यातिविमानानि स
 रुटिकनत्रउत्सूकानियुगधननियानि ॥ प्रमनियानियासादिकानि ॥ ॐ ॥ अनिविमानानियादूर
 वति ॥ नैवविमानैवकिन्नराविष्मन्ना ॥ विप्रमिताधर्मसाकथं कुरुवेति ॥ यद्दोनयालमितासाकथं कुरुवेति

शिलाप्रमिता ॥ कानियाप्रमितासाकथं कुरुवेति ॥ विद्यायालमितासाकथं कुरुवेति ॥ धननयालमितासा
 कथं कुरुवेति ॥ यद्दोनयालमितासाकथं कुरुवेति ॥ नववटयालमितासाकथं कुरुवेति ॥ यद्दोनयालमितासाकथं कुरुवेति ॥
 चक्रमिति ॥ कश्चित्सर्वधूममया ॥ कश्चिद्रूपमया ॥ कश्चित्पद्मनाभमया ॥ कश्चिद्विलिखितमया ॥ कश्चित्सकलमया ॥
 आदिनदकु ॥ सोवधुत्रययुगा ॥ दिव्यात्रकात्रयुत्रमिता ॥ ४ ॥ मोत्रिकुत्रयुत्रमिता ॥ कश्चित्सकलमया ॥
 लमिता ॥ नववटयालमिता ॥ हात्राहात्रयुत्रमिता ॥ नववटयालमिता ॥ ४ ॥ नववटयालमिता ॥ कश्चित्सकलमया ॥
 ना ॥ अनिवर्तनयुक्तयुगप्रामविदप्रनिमित्तानि सदृशानि ॥ एतप्रामविमत्रनकानिकल्पवत्काजनकवि ॥ ६७

चिन्तयन्ति ॥ अक्षद्वयं जातिद्वयं ॥ अक्षद्वयं जातिद्वयं ॥ अक्षद्वयं मन्त्रनद्वयं ॥ अक्षद्वयं तदयिदात्रिद्वयं
स्वमिष्टप्रिय विद्युयाज ॥ यिप्यसंयिप्रयाजद्वयं ॥ अक्षद्वयं मन्त्रनद्वयं ॥ अक्षद्वयं तदयिदात्रिद्वयं
रुद्रमक्षान्नप्रकय्ययन्ना ॥ युनायुनमक्षान्नप्रकय्ययन्ना ॥ वडाजेलाययन्ना ॥ पुननजशाययन्ना ॥ तदक्षं
सर्वसत्त्वानाद्वयं तत्र ॥ पुर्वकृत्तकित्तत्राक्षिस्तनचिन्तयन्ति ॥ सक्तिनयित्वा नेर्वादि किस्मिन्चिन्तयन्ति ६६
पुर्वपुर्वकृत्तकित्तत्राधम्मोहित्रना ॥ सगर्गकात्रमवत्राकिर्तेश्वत्रस्यनाममन्त्रस्मत्रनि ॥ यदा नैनामम
नस्मत्रनि ॥ तदा नैनामस्वयिकत्रहेत्रयस्मिताहवनि ॥ पुर्वद्वलद्वयकृत्तकित्तत्राक्षिस्तनचिन्तयन्ति ८

सर्वसत्त्वानामाक्षिस्तनचिन्तयन्ति ॥ सर्वसत्त्वस्य यन्त्रद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य मन्त्रनद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य कल्याणमिष्ट
पुर्वकृत्तकित्तत्राधम्मोहित्रना ॥ सगर्गकात्रमवत्राकिर्तेश्वत्रस्यनाममन्त्रस्मत्रनि ॥ यदा नैनामम
नस्मत्रनि ॥ तदा नैनामस्वयिकत्रहेत्रयस्मिताहवनि ॥ पुर्वद्वलद्वयकृत्तकित्तत्राक्षिस्तनचिन्तयन्ति ८
सर्वसत्त्वानामाक्षिस्तनचिन्तयन्ति ॥ सर्वसत्त्वस्य यन्त्रद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य मन्त्रनद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य कल्याणमिष्ट
पुर्वकृत्तकित्तत्राधम्मोहित्रना ॥ सगर्गकात्रमवत्राकिर्तेश्वत्रस्यनाममन्त्रस्मत्रनि ॥ यदा नैनामम
नस्मत्रनि ॥ तदा नैनामस्वयिकत्रहेत्रयस्मिताहवनि ॥ पुर्वद्वलद्वयकृत्तकित्तत्राक्षिस्तनचिन्तयन्ति ८
सर्वसत्त्वानामाक्षिस्तनचिन्तयन्ति ॥ सर्वसत्त्वस्य यन्त्रद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य मन्त्रनद्वयं ॥ सर्वसत्त्वस्य कल्याणमिष्ट
पुर्वकृत्तकित्तत्राधम्मोहित्रना ॥ सगर्गकात्रमवत्राकिर्तेश्वत्रस्यनाममन्त्रस्मत्रनि ॥ यदा नैनामम
नस्मत्रनि ॥ तदा नैनामस्वयिकत्रहेत्रयस्मिताहवनि ॥ पुर्वद्वलद्वयकृत्तकित्तत्राक्षिस्तनचिन्तयन्ति ८

समकद्वयानजानन्ति ॥ अह ॥ कुत्रयुगुषु उक्तमिमांसाविद्याश्चत्रययत्रमहदय ॥ यच्चयदम
 ददयाज्जानानिमिमांसाज्जानानि ॥ अथसर्वविद्वज्जिह्वारवर्गममदवयत् ॥ अस्मिन्नवर्गकाचित्स्वा
 ययउक्तमिमांसाविद्याजानन्ति ॥ एतवानाह ॥ नकचिजाननिकुलस्युषु उक्तमिमांसाविद्यात्राजिनवाद्वासादा ॥
 अयुमयायाजमगथागगानजाननियुगुषु ववाधिसत्त्वाहना ॥ अस्या ॥ कुत्रयुगुषु उक्तमिमांसाविद्याकात्रहानसर्व
 तथागगा ॥ अथादशकल्यासंख्यया ॥ यत्रिगुमिगा ॥ याज्ञववाधिसत्त्वाहना ॥ कुगाजाननि ॥ अयसयत्रमहदय
 अत्राकिर्गुषु लस्ययन्माययं यत्रिगुमिमिगुयनकश्चिजानिर्गुषु उक्तमिमांसाविद्यायन्ववगससत्त्वा ॥ ४५ ॥

अत्र ३

मयिउक्तमिमांसाविद्यासंगीपुत्रिगुर्दजापारियुक्ताहवनि ॥ नस्यजायकात्रुनचवनिर्गजानदिवात्र
 कायुमासुथागगा ॥ सन्नियगनिययत्रमाधूनजायमावाधिसत्त्वा ॥ सन्नियगनियववाठयात्रमिगादात्रसाहव
 नि ॥ अन्यवद्वर्गिणकवनिकायाकवयुगुषु गनियनंति ॥ चत्वारमसात्राजानञ्चनमादिर्दुकि ॥ सात्रप्रधनागत्रा
 काजनवगयञ्चनागत्राजा ॥ नक्तकञ्चनागत्राजा ॥ वासुकिनागत्राजा ॥ नगंभ्रमंनुनागत्राजा ॥ कानिनियुग
 जगत्सहस्रानिधत्रविम्यत्रिजदुकि ॥ अन्यवलोमायका ॥ अन्यवकार्णवदुकि ॥ नस्यकुत्रयुगुषु केकेना
 मविवत्रगथागगा ॥ काठिनियुमनिविदुमित्वासाधुकात्रमन्युयंकि ॥ साधुसाधुद्वययस्यमिद

स्वाजन्यका ३

शिविका मनि प्रवल पुला लासि ॥ विभाकिता सुसक कुल वण जाति यु प्रम प्रया ॥ अवन वक्र प्रयुक्त दि^जना
यातिन सर्वे नै इवे वक्ति वाधिसला र विद्यति ४ य ४ क विदिमा न्ध प्रयत्न ॥ अठ क विम विद्या काय जता क
थ जना ॥ म्वा सुक प्रयुक्त वरु काय धि प्र ०० नित्य दि न यो अरु सव्य ०० नित्य दि न य न थ ज न ह्म न का ठि नि इ ८
नित्य दि न य य ४ क प्रयुक्त वा क प्रदुहि गा वा ॥ ०० मा य उ क वि म हा विद्या अरु य नि सा इ क य यु मि ला ना र व नि
ह्म न ना सि वि पु क्षा र व नि ॥ म हा मे ला स म म्वा ज ना र व नि ॥ म हा क प्र द या स म ला ज ना र व नि ॥ स दि न दि न
अठ या ल मि ना य रि ना य रि प्र य नि ॥ स विद्या ध प्र च क व नि ॥ अरि व क यु नि न र ने ॥ य स क स चि द्हा स य स

सुदुदा नि ॥ मे ला वा क ध व वा सर्वे नै इवे विरु का वा धि स ला र व नि ॥ दि स्य वि म्हा स या ला स न्द दा नि ॥ मे ला वा क ध
व वा सर्वे नै इवे विरु का वा धि स ला र व नि ॥ दि यु क न र्क ना स म्वा क वा धि स रि स म्वा ध न ॥ य क कि द नु स हा ना धि
य ज नि ॥ सर्वे नै च प्र म र वि क वा धि स ला र व य ४ द र्ज हा मा र न म्हा वा ॥ य न्वा वा दा जि का वा म्वा ज यु मि ना य
हि ज द्वा दि रि च क द र्ज हा वा धि यु स नि ॥ सर्वे नै च प्र म र वि क वा धि स ला र व य ४ ज नि ज ना वा धि म न द र व
यि य वि यु या ज वि हि स र व य ४ अ रि न्वा यो ज ना क र व य ॥ प्र व न्दु य उ क वि म हा विद्या अरु य मा न स्य र्वा
द हा र व नि ॥ अ थ सर्वे नि व न द वि र्क रि र ज व न म न द वा च न् ॥ क थ र ग न र या द य उ क वि म्हा स विद्या

अन्नायाजनाकर ॥ जयस्य याश्च नाकरयुजिवस्तिरुचानूरुत्रायसम्यक्वाधुनिर्वीहस्याप्रदणक ४ भाकस
 यवेसर्वाजागक्षस्यवयूयसमनधर्मवाजस्यवयुजियुत्रर्वा ॥ उत्सूलनकसंसात्रस्यर्वाकगनिकस्यसंभवन
 क्शनात्रकानांकेषाधर्मसमृद्धान्नमूर्त्तित्रनकतिथ्यज्यानिगता नाकखादाधर्मा दमकरयुजियुत्रर्वा ॥ सर्वज्यह्ला ३६
 नस्याकृयतिद्वनस्य ०० कामिरगर्वन् ॥ याम्यषउक्तत्रिमहाविद्यामन्युयकृति ॥ नस्यचक्राद्विद्यासफत्रन
 युजियुष्टानिर्वागयिर् ॥ यदिरगर्वन्लख्यमानायामयित् ॥ ज्ञेयसविननचक्रममदियनउभनिगनमसि
 कृयोरमनूत्याद्यत् ॥ ज्ञेयत् ॥ ज्ञेयत् ॥ कलाचक्रमं कृयत् ॥ दयित् ॥ ज्ञेयत् ॥ नमनासिखर्वसत्रिनस्यासवम्य

मा २

मागायित् ॥ रगारुगाउत्रममयिउत्रुष ॥ अथसर्वदिवत्रदविर्कृतिर्नवाधिसत्वाभगदकाचन ॥ सत्रा
 म्यर्ह ॥ कलयुगजसा ४ यउक्तत्रिमहाविद्याया ४ ॥ कात्रहनयत्रमाधूत्रकायुंलाकधरुन्यत्रिगुमिगो ६ नका
 निरगथाजगकाटिनियुगजगसहस्रनिमयायय्यासिगासि ॥ नचर्कथानथगगानां सकाशा ॥ सयात्रद्या
 विजुगा ॥ नदात्रनोक्तमानामनथगगो ६ हसम्यकद्वेदविद्यावजहसन्त्यत्र ४ सगगालाकविदन् ४ यत्र
 वदम्यसात्रथि ॥ सासादवानीच ॥ मनूयानाकवूद्धा ॥ गवानस्यमयायत्रसाद ॥ हियुमृकानि ॥ नदानं ॥
 थगगनारिगासम्यकम् ॥ नदिदिगं ॥ माकूत्रयुगुर्वकत्रुधमद ॥ हियुमृक ॥ गकूत्रयुगुयुध्नाकमानाम

[illegible]

६३

[illegible]

गद्ययिर्नु॥ ननु कुत्र यदुक्तं अकर्म यत्तु किमस्य विद्याया॥ अकर्म यदर्थस्यैव न गद्ययिर्नु॥ नद्यथयिनामक
 लयुक्तं चतुर्द्विधं नानाविधं कश्चिन्नात्र ययि॥ यवश्च धूमस्तस्मिन् जमाया हयनिलका प्रकुलकादिनि॥ गद्यकात्र
 नकालना जनाजा नावर्षधनाम नययर्कनि॥ नानि जस्य निनि॥ यद्यन॥ गद्यस्य पुत्रिका यत्रिचिद्यन॥ प्रकर्म
 न्द्विधं यत्र कुर्यात्॥ गद्यस्य कटे लात्रे मू॥ ४ पिठके जस्य गद्ये लाहिले दयित्वा नस्मिन् नखलात्यगत्रय
 क्रिये प्रकानि जस्य गद्ये लाहिले मर्दयित्वा मर्दाने त्रासि विद्याया सकर्म मया कत्र यदुक्तं अकर्म लानि जद्यिर्नु
 ननु कुल यदुक्तं अकर्म मया यत्तु किमस्य विद्याया प्रकजाय स्यैव न गद्ययिर्नु॥ नद्यथयिनामक

लयुक्तं॥ यस्मात्सह न ज्ञेयं ज्ञेयं द्विधं यवर्दनि जा गोदिवाच॥ नद्यथ गद्ययिना॥ यस्मिन् सिद्धवत्क॥
 गद्यद्वयं नुल्लग्नं॥ नु जावनि॥ समजन्म॥ हिमवनि॥ कलसादयि॥ प्रकर्म कर्मद्विधं कुर्यात्
 सहस्रयत्रिवा ज्ञा गोदिवा महासमयवर्दनि॥ नर्वमव यत्तु किमस्य विद्याया प्रकजाय स्यैव न गद्ययिर्नु॥
 नद्यथयिनामक॥ ननु कुत्र यदुक्तं अकर्म यत्तु किमस्य विद्याया प्रकजाय स्यैव न गद्ययिर्नु॥ नद्यथयिनामक
 लयुक्तं चतुर्द्विधं नानाविधं कश्चिन्नात्र ययि॥ यवश्च धूमस्तस्मिन् जमाया हयनिलका प्रकुलकादिनि॥ गद्यकात्र
 नकालना जनाजा नावर्षधनाम नययर्कनि॥ नानि जस्य निनि॥ यद्यन॥ गद्यस्य पुत्रिका यत्रिचिद्यन॥ प्रकर्म
 न्द्विधं यत्र कुर्यात्॥ गद्यस्य कटे लात्रे मू॥ ४ पिठके जस्य गद्ये लाहिले दयित्वा नस्मिन् नखलात्यगत्रय
 क्रिये प्रकानि जस्य गद्ये लाहिले मर्दयित्वा मर्दाने त्रासि विद्याया सकर्म मया कत्र यदुक्तं अकर्म लानि जद्यिर्नु
 ननु कुल यदुक्तं अकर्म मया यत्तु किमस्य विद्याया प्रकजाय स्यैव न गद्ययिर्नु॥ नद्यथयिनामक

कूट ज्ञानक सूक्तनादयः ४ प्रथमये के कानि आमानि भक्तं जगदियुक्तं । ननु कुत्र यत्तद्विषयसहाविद्यायाः ४
नृकजायस्य दृष्ट्यस्यैव जनयिक्तं । नद्यथापि नामकत्रय एव जीवत्वनामयवत्तजानवति । या जानसह
मानि । कृत्यनचतुत्राणि तियाजनसहसाध्यषासाहस्यपूर्वगतजस्यवजाकृजकयाष्वचतुत्राणि तियाजन
सहसक्तस्य च पाश्चात्पूर्वतेनाजस्यजजामजवा । यत्रैवैवत् । सकल्यस्यानिकानस्य । नृकवात्रकादिक
वस्तुद्वयत्रिमात्रयत् । नृवकत्वानस्ययत्रिकृत्य ४ पुर्यादानं जकनननुषत्तद्विषयसहाविद्या । भक्तं
नृकजायस्य दृष्ट्यस्यैव जनयिक्तं । नद्यथापि नामकत्रय एव मसासमस्तु कृतुत्राणि तियाजनसहस

आत्मीयं अयमयावेदस्य नवत्तवामयययन । भक्तं मया जनाजतिनायावालागकाद्यनृकेकवि
नृगदियुक्तं । ननु कुत्र यत्तद्विषयसहाविद्याया । नृकजायस्य दृष्ट्यस्यैव जनयिक्तं ४
नद्यथापि नामकत्रय एव जकनमयादिसनस्यैव कयत्रादिवदियुक्तं । ननु यत्तद्विषयसहाविद्याया । भक्तं
यकजायस्य दृष्ट्यस्यैव जनयिक्तं । नद्यथापि नामकत्रय एव कृतुद्वयद्विवासिन स्त्रीयत्रयदात्रकदात्रिकस
वैस्यकृतुमियनिसिनावाविसखादयय । यत्तुवावाविसखानादृष्ट्यस्यैव । ननु यत्तद्विषयसहाविद्याया । नृक
जायस्य दृष्ट्यस्यैव जनयिक्तं । नद्यथापि नामकत्रय एव द्वादजमासकनसंस्वसज्जद्विमासिकननुया

दशमास्यनवाससप्ततयेन जनयायत्रियर्हद्विवात्रादिदिवर्षमिह भक्तमया कृतयुग ॥ न के कविद्वयवधि
कुं ॥ ननु कृतयुगवत्तु कत्रिमहाविद्याया नृकजायुस्ययुध्यर्हधजनयितुं ॥ नर्वकृतयुगवद्वनाय समसदृश
सुखगत कात्रि नृकहा ध्वध्विनादियै कल्यविवत्रयिद्वयागु जयना सनजनयुस्ययैवययत्रिकात्रे ॥ सर्वविक
त्रह्मप्रसादभायसि ताहवय ॥ नृवर्गगतथा जता ॥ हाकृतवर्गविक्रियतु कत्रिमहाविद्याया ॥ दध्वर्धजनयितुं ॥ ३
प्राज्यवासा मेकाकिरुसिलोक धर्मावित्तनामि ॥ अविद्याध्वं हयुद्वयसमत्काने कारु कृतयुगवद्वनायागम
नृयुक्त ॥ ४ वज्रकाधर्मावकाधर्म ॥ ४ नानाजगताधर्म ॥ ४ यदमद्वययाय ॥ ४ अवलाकिने ज्वत्रस्यायायकस

लेकर्म ॥ ४ यमिष्टि ॥ ४ ॥ नर्वकृतयुगवत्तु कत्रिमहाविद्याया उयायकगर्ह ॥ अहमयिकलयुग नृनकानिलो
कध्वर्धकोटिनियुतजनसहस्रादियुत्रिभूमिर्ग ॥ गत्वा वा मिनाहस्यतथा जगत्स्ययुजसा या जत्रिहला
धर्मयज्यना अद्वियुक्तानि ॥ नदामिनाहसुथमना जानाति ॥ नानाजगत्स्यत्यर्थं नमयाहिरिर्ग ॥ कल
युगवत्तु कत्रिमहाविद्याया जानसि कसिलवनायाजमनृयुक्ता ॥ मथाक ॥ ०० कामिहजवनि कामिज्जगत् ॥ यथा
नृयार्ह ॥ ४ यानियमन्वयन ॥ नर्वमद्वयजवन्वत्तु कत्रिमहाविद्याया समवयमानलोकध्वर्धमयसंक्रान्त ॥ ४ यु
यमासिगनिम ॥ नृनकानि गत्वा जगत्कोटिनियुतजटसहस्रानि नकल्यवित्तकहमयालुद्या वत्तु कत्रिमहा

विद्या जा जा ॥ लखनवन्तु गाहव जत्र दम्य जा जौ यन ॥ मिक्कलदिय म्य च न्द्र त्वाहव न हमारज्यद
 ज काहव ॥ सूर्य गापुद य्म ना क ॥ त्वाहव ॥ वरु महायथनाल वृत्त लहवः धर्मयुत्रि त्वाहव स्थान न धर्म
 मा सुम्य दर्श काहव ॥ सूर्य गिष्टि ग कस्य वर्ज क वच त्वाहव ॥ अमिगाह न त थ ज ग नाह ना स ॥ म्य क्क म्क ॥
 ना वला कि ग ज्वत्र स्य क व वि क न्द्र त्वाहव ॥ दिद्याष ना ला व य नि ॥ यस्य कुल य्म युद मा तु म सु थ ज ना ॥ इह स म्य
 क्क वृत्त ४ वत्त क्क त्रिमहा विद्या या हुं क्क ला क्क धा क्क काटि हिय ग ज त्वाहव माहिय त्रिगु मि ग द द स क्क ल य्म वत्त
 क्क त्रिमहा विद्या जा ज्ञान मति त थ ज त्वाहव य त्रिगु म ति ॥ अथ वला कि ग ज्वत्रा वा धि स ल्हा म हा स ल्हा ह ज व

काल हा ना भ २

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अहं ह म ह्यु ल स्य न दा न र्थ क थं ए ज व न्य द्वा क्क म्द्रा म न्द्र ग्हा ति क थं म ति ध या म्द्रा
 स ज्ज नि ग क थं स व्त्रा ज्ज ना म म्द्रा स ॥ अ नि हं मं ह्यु त्र य त्रिगु द्वि क थं स ॥ अ नि त मं ह्यु त्र स्य द मि
 मि क्क वरु त्र म्द्रा य क्क रु स्य म्द्रा न ॥ सा मं न क न म ॥ अ म ह्यु ल स्या मि गाहं त्रि व न्द्र ॥ वृन्दि मि त्र च्छु य
 द्वा ना ग च्छु म ज ग न च्छु स्रु टि क च्छु त्र य च्छु ॥ अ मि गाह स्य न थ ज न स्य का य स थो ज
 यि ग या ति द कि नि या ॥ अ म हा म ति ध या वा धि स ल्हा क्क र्थ ४ वा म या ॥ इ वत्त क्क त्रिमहा विद्या क्क
 या ॥ वरु क्क जा न त्वा ह्यु लो ज व त्र ह्यु ना ना र्थ काल त्वाहव ना वा म द स्य द र्श क्क र्थ य द्वा स्या य

त्रिमनिकर्तृव्यं दक्षिणहस्तः १ कर्मालाकर्तृव्यं दक्षिणहस्तस्य च सर्वत्राङ्गो नाममृदाकर्तृव्यं
 तस्या ४ षष्ठ्युक्तं त्रिमहाविद्याया ४ पादमत्र विद्याधरं दक्षिणहस्तं धृतं कर्तृव्यं धृतं उमाय
 मानं वामहस्तं नानाविश्वत्रयालयत्रिदशैककर्तृव्यं तस्य चर्ममूलस्य वरुणावतारं नामहा
 नाजान ४ कर्तृव्यं ४ नानाग्रहत्रयं जह्नुर्हिता ४ कर्तृव्यं ४ तस्य चर्ममूलस्य वरुणावतारं ४ चर्ममूलं ४
 मूलानामनित्रनसक्तिगाय ४ जह्नुर्लयावता कलद्विगावा वृद्धिर्मूलप्रयच्छं न सर्वज्ञा
 यत्रस्यत्रया नामात्रिषिणयानि त्रिषिखावहस्तं जह्नुर्नयानि तस्य चर्ममूलस्य चर्ममूलं नाना
 नि

मानिलै विनै यानि त्रिषिखावहस्तं जह्नुर्नयानि युक्तिधनं तस्य चर्ममूलस्य वरुणावतारं
 सर्वमानस्य के दद ४ खनविद्युहितावविषयानि कियुक्तं नृत्तं त्रिसप्तके वा विमहिसुधनं तस्य
 चार्यं हस्तान नैव दानया ४ जथवा जह्नुर्नयानि विमहिसुधनं दानया जथवामहायानं जह्नुर्नयानि
 स्य दानया ४ जथवामहायानं जह्नुर्नयानि विमहिसुधनं दानया ४ जथवानि विमहिसुधनं दानया जथजमिनाहस्तं
 जमो ४ हस्तस्य चर्ममूलं जह्नुर्नयानि जथमनदवाचनं यदिकूलयुक्तं जह्नुर्नयानि जथमनदवाचनं जह्नुर्नयानि
 हस्तं जथमनदवाचनं जह्नुर्नयानि जथमनदवाचनं जह्नुर्नयानि जथमनदवाचनं जह्नुर्नयानि

सप्रयाकथानि ॥ नानायुधे नानागले नानाध्वे ४ यदि कुलपुत्रो नदयिनसविद्यो न धर्मात्तत्र न स्यात् न
 यदयं न स्यात्तदा कार्यमानसिकमनुलक्षितं यं ॥ आचार्यनमस्तु मूढालं कदा न्ययदर्थयितव्यानि ज
 थयुग्माकुमसुथगगाहसम्यक्कम्पद्वे ॥ इवलाकिं न ॥ अत्राधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ नदवाचनं ददस्वमकुलपु ॥ १६
 उक्तं उक्तलिमहाविद्या ॥ आयनाहमनकसत्त्वकाटिद्वियुनसगगहस्यानिसंसात्रद्व्यात्यलिमात्रययं कि
 प्रकाशं नृणां सम्यक्कं वाधिसहि समुद्युतं ॥ अथावलाकि ॥ अत्राधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ यथाकुमसुथगगा
 तस्याहं ४ सम्यक्कं वृद्धस्य ०० माय उक्तलिमहाविद्याम ॥ नृपुत्र ॥ ॐ महियध्वं मिमि ॥ यस्मिन्कात्र ००
 यं

यम उक्तलिमहाविद्या नृपुत्रं यदहं नृणां वाचस्वाधिया ४ सदवत्वनययंका ४ कटुत्रिय ॥ वसक्तलिना ४ नृध
 अवलात्रामहासम्पदा ४ सर्वविद्युविनायका ४ निष्कृताय नयकं नृणां सत्त्वमहाकात्रामा नृणां सत्त्वना ४
 अथयुग्माकुमननथगगे ॥ अत्राहं सत्त्वमहाकात्रामा नृणां सत्त्वमहाकात्रामा नृणां सत्त्वना ४
 युनामिर्न ॥ मृकाहात्रकनृहिलामिगाहस्यगथगगाहिनसम्यक्कम्पद्वे ॥ अथावलाकि ॥ अत्राधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ यथाकुमसुथगगा
 तस्याहं ४ सम्यक्कं वृद्धस्य ०० माय उक्तलिमहाविद्याम ॥ नृपुत्र ॥ ॐ महियध्वं मिमि ॥ यस्मिन्कात्र ००
 उक्तलिमहाविद्या नृहिलायनयुग्माकुमालो ॥ अत्राहं सत्त्वमहाकात्रामा नृणां सत्त्वना ४ नृध

धिः॥ धर्मजथाहिरुधोनामसमाधिः॥ नागद्वयमादयत्रिसाकनामसमाधिः॥ ज्ञानकव
त्सा नामसमाधिः॥ यथाजमीनानिर्द्विगुणनामसमाधिः॥ मद्रामेनध्वजातामसमाधिः॥ सर्व
रुवाकजहमनामसमाधिः॥ सर्वतथाजगत्वावलीकनामसमाधिः॥ स्रुतिविदितज्ञास
नामसमाधिः॥ नवयैत्र्यसूखमकाकजमसाधिः॥ सद्रुतिनरुत॥ यद्गसांयउकनीमहा
विद्याध्वजयन्ति॥ अथसर्वधीवज्रविस्फुलीरुगयंतमतदवावताकग्राहकगवतगङ्गयंय
गुमउकनिमहाविद्यालसमगुगवाताह॥ अस्तिकलपुत्रवावाला नस्यामहा नगयोधर्म

१७

रानकायः॥ सावउकनिमहाविद्याध्वजयन्ती॥ वाययन्ति॥ यानिंध्यमनसिकलुन॥ अह॥
गमिष्याम्यहंरुगवतावात्रानसिमहानगत्रिकस्यधर्मलानकस्यधर्मदर्शनायर्वदमययययासनाय॥ रुगवाला
ह॥ साधुसाधुकप्रयुक्तैर्वक्त्रुचदन्नरास्यकलयुधर्मलानकथेमावउकनिमहाविद्याध्वजयन्ति॥ सधर्मला
नकसुथाजगत्समादृष्टव्यः॥ उजगत्सुय० वदृष्टव्यः॥ दृष्टव्यदृष्ट० वदृष्टव्यः॥ सर्वनिर्धजगवदृष्टव्यः॥ अविन
थवादिचदृष्टव्यः॥ उगदृक्प्रह० वदृष्टव्यः॥ जनत्रासिप्रिडृष्टव्यः॥ वज्रदक्षिनामनिविदृष्टव्यः॥ धर्मत्राज०
वदृष्टव्यः॥ नवदृष्टव्यः॥ लयाधर्मलानकस्यदृष्टव्यविविकिरुमृत्यादयीगयं॥ मातृकलपुत्रवाधिसत्त्वहं

भूला ज्ञेयार्थस्य यत्प्रसिद्धं ॥ सच धर्मज्ञानक ४ ज्ञानवियनो ॥ ज्ञानाप्रविशनां लार्थो यत्तद्विद्वत् ४ यत्प्रित्त ४
 कावाथार्थो ज्ञानयुतावयप्रियद्वि ४ ससं वत ०० र्थायथ ४ ज्ञथसवदिवत्र दविक्क ॥ ए जवत मगदवाचन्
 यथारूपं ए जवता ॥ ज्ञथसवदिवत्र न विस्मृति वाधिसत्त्व ज्ञन के वाधिसत्त्व यथे दाग्द ह्मे ४ यवजिने दाल १५
 कदात्रिकादिहि ४ सत्यसि ४ धर्मज्ञानक स्यादजाकर्म हादिर्यनि कृणानि दिव्या न्ययान सानि मोत्रि दूध प्रसुग
 दामक सुत्र सा प्रा द्दिसा प्रत्त सात्र संधाय सुशानि क ह्मे गू र्था गुह्यविहदिकानि ॥ ज्ञानानि च विविधानि च विविध
 निच विविधानि ॥ यस्मानि चि वना धूषितानि विद्या धनस्य क्त्वादिता निच कादिकव क्त्वा न्यग्नि सोच वक्त्वा दितान्यानि च

विविधनिवन्नादियव्यादितद्यथा ॥ उत्पलकसूदयदुत्रिकमान्वा नवाहिसज्जका किनिचोदत्वाग्राध्यन्यानि
विविधनिकाद्वयव्यादियम्यकेकनविचपाटलाभिः मूककवाषिकानिसूकनाकाध्वविगानिसूमलानवमात्रि
काचक्रवाकापकूडितान्युद्युष्टाहितानिजत्रिकउत्सुकानिजतयुक्तिकानिनिलयिः मलाहितावदानमाजिद्वस्तुदि
कनउदवद्युष्टानि। नन्याससूत्रजजजजानिद्वयानिविविधनिसहित्वाथनवात्रानसिम्पलानजत्रिकनायुजग
म॥ जेनेद्वैद्यवात्रानसिम्पलानजत्रिमन्त्राफ॥ यनसधर्मलानकस्तनावसुकानः॥ उपसूकस्य
यादोशित्रसाहितव्यासगनद्वयः॥ जत्रवियम्ना॥ स्वयंयथैयथस्तनगानिक्कग्राधूयानलानिवन्नालनव

निजधमात्मादिमहतिम्यज्जकलानस्यधर्मलानकस्ययुजसात्पालत्रितर्गं४गहिह्यामिदमवाचन॥जहा
धर्मनिधनासादकःजस्तननिवित्रिवनीसुखय॥जनवज्जहासिजगजायथाजजनहगासि॥सर्वमानस्य
रुगेष्टज्जतिगतवसकाज्जधर्मजयत॥दवानागयकागधर्वाजसूजाकिन्नवासहाजगममनः८०
सामनूषासर्वतसन्नीयकिना॥नवधर्मजवनकालमदावजसमयधर्मयथायुत्रिद्वगसि॥
यत्रिमाकूपसिद्धेव४सत्वा४संसात्रधनवद्वा४पुद्गावर्गसत्त्वा४यद्दृष्ट्याजानस्यमिदानगर्गा
वज्जतिपस्यति॥नवसतनयत्रिगुरुकूर्वन्निदग्जनमागुहासर्वपापानिनिर्द्धरसि॥यथासिद्ध

निवनाकर्तव्यं॥नवसत्तर्जनमागुनसर्वपापानिदरुसि॥ज्ञानकनवतथागतादत्त४सम्यक्व
द्वा४ज्जत्येवानकवाधिसत्त्वकाठिनियुक्तगतसदमादिनवयज्जकर्महाउपसंक्रामनी॥वृक्षाविष्णु
महंज्जत्रयुद्धादीत्यवायुनवधमागुयायमज्जधर्मजाज्ञा४त्ययत्वाजामहाजाज्ञान४ज्जधर्मधर्म
लानकस्यैतदवाचन॥मात्वंकनयुक्कीकुरुसत्त्वादयसि॥००कुरिसिमावाक्कज्जदीयताजि
का४संसात्रस्यनेमिहिका४यत्रामधुलस्यत्वादिका४॥यत्रकलयुगुयउकेनीमहाविद्याज्ञान
न॥नयनंजागद्धयदामोहनसंलियाके॥यथाज्जधर्मनदस्यसुखंस्वयनसंज्ञानमल॥नवमवा

कूत्रयुक्तयस्य यत्कूलिसहाविद्याकायगतानतस्य कायजालनद्वयनमाह न संलियात् ॥ अथ
सर्वज्ञावनत विष्णुलीगाह म्यादय निष्कृतमनद वायत् ॥ विकनलिमस्य यत्कूलिगारव निष्
माग्नस्य यदग्निकारव ॥ धर्मय नि स विनस्य धर्मनस्य न सीग यम्य सात् ॥ अनुराजस्य क्री ६९
म्यान्नि विप्रुहीनस्य वाधि विरुमददस्य ॥ ददस्य युनिवि न नूवाध कायय निष्कृतददस्य ॥ अ
रुद्रा धर्मक गलाना युनिवाह ॥ ७० निसर्वरुना ८ कथय नि वाक्य स धूराय यत् ॥ यानुवक नूदद
स्वप्नयत्कूत्रीमहाविद्याय नाह कि प्रमनून जास्य क्री वाधिसहि सयुद्धा रवय ॥ दादसा का न धर्म

यत्कूत्रयुक्तयस्य ॥ सर्वसत्त्वानां संसात्रिका इवात्यभिप्राय ययं ॥ असूत्रयुक्त धर्मोक्तय ययं ॥ यत्कूलि
मिसहाविद्यालक्षणा रारव ॥ यददस्य स यत्कूलि मिसहाविद्या नुनारव सत्त्व यला यदमदि
यानां दिवा रव ॥ अथ स धर्मस्तन कस्तस्य नद वायत् ॥ इतरस्य द यत्कूलि मिसहाविद्या ॥ अरु
द्रव यद ॥ अनुराज न यद ॥ अकूय न यद ॥ अनुराज न यद ॥ मा कूय द ॥ न थग
न हून विष्णु द्वि यद ॥ नाग द्वय माह स सी न इह रव य निवर्त न यद ॥ सदा वाय क्री गत्य यद ॥
ध्यान विमा कू समा धि समा य रि यद यं ॥ सर्व धर्म युव न यद ॥ सैनि ह्य काल द य नां ली का कि

स्थाययानि। स्थाययित्वा दिवसान् नृपनसू र्कनाय नयत्रिहम ययित्वा सूपल युदार्त्त विना
 दयन्ति। नतः अंशु वाचियनित्येन किं सा नमिति अवस्थित। ननु लसा नमिति॥ नवनवाः
 न्यथा गमवसवस्तु ४॥ सर्वे प्रागनाका ॥ यं यत्तु नृपि सदा विद्या नाली ननु लसा ननु वर्यः ॥ ८३
 यस्या का न हान कलपुत्रा विस्तृता गमययन्ति रुसन्ति। दानया नमितीर्थनः ॥ १०॥ लया नमि
 ताथिनः ॥ विर्यया नमिताथिनः ॥ ध्यानया नमिताथिनः ॥ पुष्ट्या नमिताथिनः ॥ नृकज्ञायेत नृकज्ञय
 नृषट्पानमिताः ॥ यत्रियुत्रयन्ति। यस्य कस्यचिद सुस्यर्जनो यि। अवेवहिक रुसि स्थितिरुने

विद्यां ॥ नयं गं क्रीमि कलयेत् त्वं कृकां ॥ नृपि सदा विद्या नाली ननु लसा ननु वर्यः ॥ ८३
 नाली दुर्लभस्य नाम गृहनी ॥ नृकनाम गृहघन सर्वे तथा गता विवत्रपिंशु या गृहार्थं सन गृह नयत्ये
 यत्तु वर्ययत्रिह ॥ सर्वे यि स्थाने नयन्ति ता रुवन्ति ॥ अथ सर्वे वत्र ह विद्वन्ति रुजवन्तः धर्मज्ञानक
 मतदक्षवन्तः ॥ ददस्व भवत्तु कत्रिम सदा विद्यायौ नाली ॥ अथ सधर्मज्ञानक ॥ सविन्यो विन्ययवस्थितः ॥ न
 स्या का धम कृद्वानि ॥ अत्रि ॥ न ॥ ददस्व नृपि सदा विद्या नाली सयं वा विस्तृता ॥ न कदस्व नृपि यक ॥
 नतः सधर्मज्ञानक ॥ सा कृन्तयति कुगं कानि ॥ अत्रि ॥ न ॥ नतः ॥ सदन सदा का कृद्वानि ॥ अत्रि ॥ न ॥ दद

स्वर्यवत्तु किमिहाविद्यात्राहिमयस्वाधिसत्ता ॥ न क इव जालियुक् ४ जयसधर्मलाहकजा का जय
 वजाकयनि ॥ या वल्यस्य निजप्रका हुरुने न वरुजता सकट धन सर्वहृति प्रसिकर्तु हुरय मद्रसंयम
 सियाजं कर्तुं जत्रिज ॥ तं न तादृजं नृपदृक् सर्वदा वज्रविस्मृति ५ तदकाचत ॥ अनृहात संकल्यता ८४
 वलाकि तं ज्वज धवा धिसत्वन महासत्वन यत्तु किमिहाविद्यात्राहि उक्तु कलमिमाष उक्तु किमिहा वि
 द्यात्राही ॥ तं न स संगुभन कृता जत्रियुटन तत्ता उक्तु हि कुमाज ॥ ४ अंम निय द्वा हं मिति ॥ ४०० यं क
 समनन नदमा एव दिका जय विवि यक यिता ४१ ४० मसमाधय ४ सर्व विवज्र विवर्क नि नायुतिले ४

यहूर

तद्यथा नृक मना नाम समाधि ४॥ मेरी कनू लमदिता नाम समाधि ४ या जगता नाम समाधि ॥ मा कयु यजय
 वला नाम समाधि ॥ सर्व जाक क नाम समाधि ॥ ४०० नाम समाधि ४ धर्म ध नाम समाधि ४ ०० मस
 माधय ४ युति न ४ ४ उक्तु हि न मागु न सर्व विवज्र विवर्क नि दमवा धिसत्वन ॥ तस्या वाधयस्य दकि हय नाम
 यिकुमा ज ४ ४ चला आदीया ४ सय नन यत्रिय ४ ४ ४ जयसधर्मलानक सस्य नदकाचत ४ न क सकन
 स्य न रवतिदकि हय गय च यत्तु किमिहाविद्या ४ न स ग्टा मिक् नय गल कका हत ४ लकवा धिसत्वन
 त जयसिता नार्थ सिधे नय जल म्मा क नय ४ ॥ तं न धर्मलानक न तस्य स न स हमा म्ल्य मूका हा न मयना

धर्म

मिर्गं सुकथयति॥ कृत्तयुत्तुसुद्धवननञ्जकम् नसुत्तु अजतस्यार्हन् ४ समकवृद्धस्थायनामयितव्यं ४ नथ
सर्वविवनहविक्रितस्यधर्मैरानकस्ययायोसिजसावदित्वायुकात् ४ ५ ॥ यत्रिद्वर्गुलसुलारम
नात्रथयनञ्जतवनन्विदात्रसुत्तायसंक्रान्त ४ ॥ उयसंक्रमणवतयायोसिजसावदित्वायुकात् ४ ५
गा इहत् ॥ नथसाकम्नितजवाक्षकम्नितसुत्तायजता ४ इहसंमर्कवृद्धसुभनदवाचन् ॥ लल्लुलार
सुत्तुलयुत्तु ॥ यथाहजवनसुत्तुनसंक्रान्तिर्न ॥ न ४ सयति ४ सम्यक्वृद्धकाटिसनियमिता ४ नैथाया
नथजतावृत्ताश्चत्रितिरावितुमात्रयध ४ नम ४ सफार्नवृद्धकाठिना ॥ नद्यथाउवत्रचलवृद्धस्तदा ॥

वृत्तस्यस्यगिसम्यक्वृद्धकाटिरिन्काश्चित्रिर्होति ॥ ३०० ॥ नगात्रामविवत्रादवमिर्ग्यसूर्ययुत्तुनाम
विवत्रासुत्तुनकानिवाधिसंत्वकाठिनियुत्तुनजगसर्गैस्सौदस्रानियुतिवसंति ॥ नस्मिन्सूर्ययुत्तुनामविवत्र
दादजजगहगाहिनैर्वायुवृत्तानांयाश्चनियुत्तुनाउभयविनानियाल्वयावृत्तदिवमहिनत्तुस्वविनानियत्र
मसाहनानि ॥ उद्यानानिधिविग्राहिसूत्रमनियानिदिवयुक्कित्रिहि ॥ नन्यानिचक्रुवाजजगसर्गस्रानिदिव
सर्ववृत्तसयानिसकायट्टुदासकलायुयत्तुविनानैर्वाकृवाजजगनामध्यसात्रदकानामविनामहिनत्तुयत्तुवा
वाधिसत्त्वानां सर्वैक्येक्येनयुत्तुनैकत्राति ॥ यदागवावाधिसत्त्वास्तुवृत्तुवाजजगस्रयुविजति ॥ युविस्त्वावय

मया ४ केचिदिन्द्र निलमया ४ केचित्पद्ममया ४ केचित्पद्ममया ४ केचित्पद्ममया ४ केचित्पद्ममया ॥ केचिदुज्ज्वलमया ४
दृग्भक्त्यर्थेन जान ४ ५ केचित्स्मितवर्ण ४ ६ जिति ४ ७ जसदुमा निविधिवत्तु खचित्ता निप्रमममहद्वियानि
विचित्रा निप्रमद्वियानि । मयू उज्ज्वलवर्ण ४ ८ यतिवर्ण ॥ नैजगतीका जगाम विवर्ण निर्वदिगन्तव्यधन
यति ॥ यत्तु यथमविरूपादि कावाधिसत्त्वात् ४ ९ नानिमिकुक्किनयति । ज्ज्वलद्वय आतिद्व ४ ख ; ज्ज्वलद्वय ; म
त्रनद्वय ; ०० द्रियस्य यथा जविया जद्व ४ ख । ज्ज्वलद्वय यत्ता नाद्वयका प्रसृ ० प्रकाय यत्ता नाद्व ४ ख यत्ता न
ज्ज्वलद्वय यत्ता नाद्व ४ ख ॥ ०० त्वकाय सन्ध जमन्विचिन्त्य नदा नैयर्थकमात्रुयसद्काय लुचिधयय

[illegible]

त्वेषं कवचा विद्वन्निः श्रुत्या कानि सुखं यः ॥ वा कवचा गम्य दानं ॥ निदानं ति' वरुणः, जानकः वेय
 ल्याहुत धर्मायुधं अयुनस्य नमिदं संज्ञा कथा कुर्वन्ति ॥ तदा सर्वे विवर्ण विष्णु स्मिता आ म विवर्ण दवनि
 य सर्वे यिष्ठि माय आ म विवर्ण ४ ध्वजा गुण नाम आ म विवर्ण ४ सर्व आ म विवर्ण ४ इति निया जन सह समाहि नस्मि ८ ८
 न ॥ आ म विवर्ण इति निया वर्ण सह समाध्य त्वन्तः विविध न त्रय त्रिख चित्तानि सभा न माहा विचित्रा द्वि न वयव
 तत्रा जव न क इत्य व का ध्य न कानि च न व के ज न सह समाहि । अ गु वृ क ज न सह समाहि नस्मि न आ म वि
 वर्ण व ज म यित्वा मि ४ नस्मि आ म विवर्ण न व वति कृडा ज न ज न सह समाहि दिव्य स्वर्ण मया निम्न का हा न यद्

कामकलाययुल्लिखिताः ॥ दृष्टमात्रयत्रविनिर्गताः ॥ चतुर्कालिप्रज्ञावलाजिगानितस्तुष्टकृताप्रवृत्तौ
 वेष्टुमयानिप्रनयजिस्वचितानिविचिन्तानिप्रमनियानि ॥ गेष्टाकृताप्रवृत्तथाजगताविज्ञानिहोवस्तुस्तुजा
 मृद्विप्रकाशानाम्मन्त्र्याष्टधर्मद्वयजि ॥ यदृष्टवद्वयप्रमितानिदृष्टानि ॥ दानयाप्रमितानिदृष्टानि ॥ जि
 प्रयाप्रमितानिदृष्टानि ॥ क्रानियाप्रमितानिदृष्टानि ॥ विर्ययाप्रमितानिदृष्टानि ॥ धनयाप्रमितानिदृष्टानि
 नि ॥ युद्धयाप्रमितानिदृष्टानि ॥ नृवंविविधधर्मद्वयजनाकृत्वा ॥ जामृद्विप्रकाशानाम्मन्त्र्याष्टकालन
 कालधर्मद्वयजि ॥ नृवंककुलपूजावजाकिर्गवप्रत्यवाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वस्यलोमविवजाहियावत्यय

स्य नि॥ तस्मिन्नेव जे नव प्रह विहा प्रद व नाग ज कुंज न्ध वी सुत्र ज नू उ कि न्न प्र म हा न ग म नू म नू व्या ॥ म ह
 श्व प्र ना ना य न य र्व ज मा नि द व य र्ण नि स नि य ना नि ॥ ज न का नि वा धि स त्व ४ का ठि ति य न ग न स ह मा धि स नि
 य नि ता नि ४ ज थ स र्व ति व प्र ह वि र्क रि ह ज र्व न म ग द वा च नू ॥ कि र्ण ग व न न्या नि आ म वि व ना धि स वि द्य न वा
 न स वि द न वा ४ र्ण ग वा ना ह ॥ न न ४ कृ त य र्ण आ म वि व ना द र्व नि । कृ म्या व आ कि न श्व प्र स्य द कि न या दा णु र्व य
 गु न स त्वा आ म हा स डो ४ य पि न म नि न च आ ह न्य व ग म ह य नि । न ज दा द कि द या दा णु र्व । द द क नि कृ म नि ४
 न दा व उ वा म्भ्य य र्ण नि । न व र्ण म आ नि म न्ग कृ नि । प्र व म व कृ ल य र्ण व आ कि न श्व प्र स्य दि द्य न स वि ता ॥ ज

८५

थ स र्व ति व प्र ह वि र्क रि ह ग र्व न म ग द वा च नू ॥ न द पि र्ण ग व न्ना म वि व न स वि द न न ४ र्ण ग वा ना
 ह ॥ न द पि कृ ल य र्ण न स वि द न ४ ज थ स र्व ति व प्र न वि र्क रि ह ग व न म ग द वा च नू ॥ ना ग कृ नि र्ण ग व
 न व आ कि श्व प्र ४ र्ण ग वा ना ह ॥ ना ग कृ नि कृ त य र्ण व आ कि न श्व प्र ४ ज स्मि न्न व जे न व प्र ह म हा वि हा प्र म
 म द र्ज ना य ॥ य य पा ज ना या ॥ म ह श्व प्र स्य द व य र्ण स हा या लो क धा कृ या क प्र ह म र्द ह मा र्च नो ॥ ज थ व लो
 कि न श्व प्र ह प्र म य उ र्ण य नि ल पि न ला दि ना व दा ग मा जि र्ण कृ ठि क प्र ज न व र्ण ४ ग व न प्र म य ज न व
 प्र ह वि हा प्र मा ग कृ नि ॥ ना ग र्ण र्ण ग व न मि यु द कि द वा कृ त्ते ज न व प्र ना धि हा ना नि कृ म्या वि वि म र्द न प्र

कं ग कं नि ४ नं न ज ला अ वि वि म्म सान ल कं भि मि ला व म नू क र्व नि ॥ अ यं स र्व ति व ज द वि र्व मि र्ग व न
 म न द वा च नू ॥ क ग र व र्जं व ज स म य ज्ञा ज क नि ॥ र ज वा ना द ॥ न व क ल दू ग्रा व न कि नं ज व द ना
 ना वि क्षा न भं य उ र्ग ना ॥ गं वा सि ऊ ग व न वि सा न मा ज क नि ४ ज्ञा ज नं च मा मि ४ यु द कि ति क ला वि वि म्म
 सान न कं ग क नि ४ ग ला वा वा वि म दा न कं भि मि ला व क नि ॥ ग सि ऊ ग व न वि सा न भु र नि मि नि ला नि या द
 र्ग ना नि ४ दि र्वा ४ र कि न न्य ४ या द र्ग ४ ग व ऊ ग व न वि सा न दि व सो व र्ग नि ला स भ्य नं ४ ॐ द भं ज न व न वि
 ला नो द भ्य नं ४ अ थ व न कि नं ४ स र्वा व नि ला व धा नु नि कृ म य न ज न व न वि सा न स न स म्पु सि न ४ अ नू र्व

२०

अ ऊ ग व न वि ला र्जं स या य ४ अ थ ग सि ऊ ग व न वि सा न यु वि र्ग ४ ग दा क ल वि क ॥ ल वि क नू ग स न नि यो
 व न र ज वा ना ना च य नि ॥ अ न स र्व क न द र्ग क न स स व य मि वा क ४ अ थ व न कि नं ज व न र ज व न म न
 द वा च नू ॥ य थ र्ग य र्ग व न नू र्व क म या क र्म र मि नि वि या दि ना ४ अ थ र ज वा ता ध का न म दा नू ॥ सा ध सा ध
 क न द र्ग य र्ग द भं क र्म र मि नि वि या दि ना ॥ अ थ व न कि नं ज व न र ज व न ४ यु द ना न्य य ना म य नि ४ ॐ मा नि र्ग र ज
 व न मि ना र्ग न ग थ ग न न यु दि ना नि य क र्म ल्या वा म या र्ग र पि ना मि ॥ अ थ म र्ग ज व द व द र्ग य न र ज वा
 स ना यु स र्ग ना ॥ उ य स र्ग म र ज व न या यो गि ल सा र वि व द र व न म न द वा च नू ॥ न र या द र ज व न वा क ल न नि र्ग

अथ समुद्र दत्तः राजवानाह ॥ गच्छन्तु यथा वना किञ्चन स्यात्कनर्दी ॥ दास्यति । अथ सह ष्वत्र देवयूगा गलाव
 लाकिगं ष्वत्रस्य पादयामियदियुं कृविष्यत् ॥ ककुमात्र ४ नमस्तु वलाकिगं ष्वत्राय । सह ष्वत्राय । यद्यधत्राय
 य ~~का~~ सनाय । यद्यधियाय । अहहलायाय ॥ यद्यधियाय यत्रिदगाय । उगदात्वा सकत्राय । यथिविवत्रत्राय
 नकत्राय । युक्तादनकत्राय । अथ सह ष्वत्र देवयूगा इवत्राकिगं ष्वत्रस्य सागं विलास ॥ कलाह कृत्वा नववस्ति
 तः ॥ अथ वलाकिगं ष्वत्रस्य सुभगदवाचन ॥ किं कनर्दी लं कुत्र यत्र उहिरावनववस्ति तः ॥ अथ सह ष्वत्र देवयूगा सु
 भगदवाचन ॥ ददस्व मया कनर्दी मन्त्रु जायास्य कथोक्षी ॥ अथ वलाकिगं ष्वत्रस्य सुभगदवाचन ॥ लविस्यसि लं कु

लयुगविदगाया लाकध मोहसंज्ञा नामगथागगा ॥ हंसमकवृद्धा विष्णु द्यावजनमयन्तः ॥ सृगगालाकवि
 दन्त्रुजः ॥ यत्रुखदम्यसात्रथि ॥ अस्मादवानाक्रमन्त्या नाकवृद्धा लगवान् ॥ अथ सा उमादयस्य सुकृम्याव
 लाकिगं ष्वत्रस्य यादोणिजसाव दिलाः ॥ अथ वलाकिगं ष्वत्रस्य कालिधनः ॥ ककुमात्र ४ नमस्तु वत्राकिगं
 ष्वत्राय । सह ष्वत्राय । यानदवाय । यथिविवत्रलाचनकत्राय । अहहलायाय । यद्यधियाय । यत्रिदगाय । निर्व
 नदमिसस्युस्तिगाय । सुभगनकत्राय । धर्मधत्राय । अथ सोमादविलागालिधनकलावत्राकिगं ष्वत्रस्य या
 दात्रककुमात्र ४ यत्रिमाचयमस्ति लावाकृणुयसमिया कत्रिमजवलियुक्ता गहावासद्ः स्वाना ॥ अगगय

त्रिगुहासं जलितानां। यत्रिभाकयमा॥ जथावलाकिर्गण्य आ/वाधिसत्त्वस्मान्दभनवाचन॥ ४॥ विषयभित्तिर
जिनिहिमवर्ग॥ यवर्गनाजस्यदकिर्नयावर्गवलाकधकुलविषयि। उमज्वरनामगथागमा इहसम्यक्
काविद्याचनसम्यक्॥ ४॥ रजगा लाकविदन्तु॥ ४॥ यत्रवदम्यसात्रि॥ ४॥ सास्त्रादेवाना क्मन्व्यानाकृद्कोरग ५२
वान्॥ ४॥ सास्त्रादेविद्याकत्रनमन्व्याका॥ ४॥ रजवानाह ॥ ४॥ यज्यसर्वदिवचनविष्कम्भिन् कर्तुना उमादेविमवत्राक
नय्यत्रसर्वगै हन्तुना यासम्यक्वाधि॥ ४॥ यत्रवौधिकप्रयुग्मसहज्यत्रनिष्कृष्टानाद्यागवर्गि॥ ४॥ जथासर्व
दिवचनविष्कम्भि रजवानादवाचन॥ ४॥ रजगा रजवनवलाकिर्गण्य ज्वरधननचक्रप्रन्याफमवरज

वनवलाकिर्गण्यमन्व्याका॥ ४॥ जयमसरुजत्स; जयमयस्समात्रथ॥ ४॥ जयमन्वासायूक्ता। जयमयत्रि
सासित॥ ४॥ वाधिसाज्ज॥ ४॥ सवनसधर्मकायविद्यालयदधर्क॥ ४॥ जथासर्वदिवचनविष्कम्भिन् प्रनवरजव
नामगदकाचन॥ ४॥ जयस्त्रास्त्राकम्भजवदधयत्वमवलाकिर्गण्य ज्वरज्यरुनविषय॥ ४॥ रजवानाह॥ ४॥ जदथायिहा
ससर्वदिवचनविष्कम्भि। चक्रवाधमसाचक्रवाजयवर्गनाजानो। मरिचिन्द्रमसास्त्रिचिदीयवर्गनाजा
नो॥ ४॥ कालमहाकालोयवर्गनाजानो॥ ४॥ सस्रष्टमसास्रष्टेयवर्गनाजानो॥ ४॥ यत्रवाचन॥ ४॥ यवर्गनाजानो
नादजक॥ ४॥ यवर्गनाजानो॥ ४॥ जालिनिस्त्रय॥ ४॥ सर्वगनाजानो॥ ४॥ जगज्जग॥ ४॥ यवर्गनाजानो॥ ४॥ नृकज्जगयवर्गनाजानो॥ ४॥ रज

न

वनश्च पुर्वगुत्रा जा ४ मरुमनित्रन ४ पुर्वगिना जा ४ सुदगुं च यवगिना जा ४ अकात्रदर्शन ४ यवगिना जा ४ नमस्
 यवगिना जा ४ पुंयुलानि वा । यत्र सुदसा हि वा ४ यत्र काठि हि यत्र सग सुदसा हि ४ वा ४ सव्या मयिकत्र मयिगके
 मया कुलपूज जयिर्तु ४ नलवला किं जत्र ज्यजक नय्य सलार्जनयिर्तु ४ तद्यथा यिना सकलयुगके
 नमया यत्र तान्त्रजसियुमा ह मण्ट हिर्तु ४ म् ॥ ननु कुत्र पूजा वला किं जत्र ज्यजक नमया य्य सलार्जनयिर्तु ४
 नद थयिना सकत्र पूजक नमया मरुत स्रुये के के विन्दु जनयिर्तु ४ ननु कुत्र पूजा वला किं जत्र ज्यजक नय्य
 द्य सलार्जनयिर्तु ॥ तद्यथा यिना सकत्र पूजक नमया जीषवन से के का वि यगु नि जनयिर्तु ॥ ननु कुलपू

५३

के ३

जावला किं जत्र ज्यजक नय्य सलार्जनयिर्तु ४ तद्यथा यिना सकत्र पूजक मत्र ४ यवगिना का रुर्तु नासिह
 वन ४ मरुत स्रुये मत्र न्द मर्तु जल वचरु द्वियनि वासि न ४ सुयुत्र यदात्र क ॥ काजिका दम ४ सर्वे न प्रखकार
 वय ४ सवस मत्र ४ यत्र वन ना जा ४ नका यर्य ना त्रिखिता वन ४ के के नृका के न जनयिर्तु ४ ननु कुत्र वला किं
 जत्र ज्यजक नय्य सलार्जनयिर्तु ४ तद्यथा यिना मसु द्वनि वन वि क्ति न्द दण जग न दि वाल का पुमा
 नथा जग रुं म सम के वला ज्वा वन वि क्ति या गु जय ना सन रुं न यन यले वर्य पत्रि का ४ सर्वे व के नय्य
 रुत थ जग उय सि ता रु वे यु ४ यज्ज ने वान थ गता ना मय रुत नय्य रुं ४ ननु ४ कुत्र पूजा वला किं

श्वत्रस्यैकवात्रायुष्यस्य ४ नद्यथयिनामसर्वदिवत्रदिविष्मिन्नवत्राकिर्गजत्रत्रनेके ४ समाधि
 सने ४ सुखाजग ४ नद्यथयुर्लङ्गा नाम समाधि ४ विरुषनकत्रा नाम समाधि ४ ज्ञाखनकत्रा नाम समाधि ४ वि
 द्यत्राचनाना समाधि ४ क्यनाना समाधि ४ मलामनसिना समाधि ४ ज्ञाकात्रकना समाधि ४ वर्जमात्रा
 नाम समाधि ४ वत्रदाना समाधि ४ भित्तविद्याना समाधि ४ अर्ननविद्याना समाधि ४ युगिलानकना नाम स
 माधि ४ जत्राज्जना नाम समाधि ४ वर्ज्याकात्रा नाम समाधि ४ वर्जसूखाना समाधि ४ सदावत्रकायका नाम स
 माधि ४ उत्राज्जना नाम समाधि ४ वर्ज्याकात्रा नाम समाधि ४ वर्जसूखाना समाधि ४ सदावत्रकायका नाम स
 माधि ४ उत्राज्जना नाम समाधि ४ वर्ज्याकात्रा नाम समाधि ४ वर्जसूखाना समाधि ४ सदावत्रकायका नाम स
 माधि ४ उत्राज्जना नाम समाधि ४ वर्ज्याकात्रा नाम समाधि ४ वर्जसूखाना समाधि ४ सदावत्रकायका नाम स

माधि ४ दिताकत्राचनना नाम समाधि ४ धर्माहिसूखाना समाधि ४ वर्जकृत्तिना समाधि ४ सुदंज
 काना समाधि ४ निर्वीरकत्रा नाम समाधि ४ नननत्रभिनिषादकत्रा नाम समाधि ४ यात्राकत्रा नाम
 समाधि ४ विवित्रिहमना समाधि ४ उत्राज्जना नाम समाधि ४ वर्जसूखाना समाधि ४ सदावत्रकायका नाम स
 माधि ४ मेष्ट्याहिसूखाना समाधि ४ युद्धाप्रगिलासिना नाम समाधि ४ सदाकाना नाम समाधि ४ नृकत्राक
 त्राना समाधि ४ ज्ञेविविसूखाना समाधि ४ सागत्रागमित्रा नाम समाधि ४ अगयत्रिवात्रा नाम समाधि ४
 मार्जसूखाना नाम समाधि ४ नृहिर ४ कत्रयुगावलाकिर्गजत्र ४ समस्ताजग ४ नद्यथयिनामसर्वदिव

लसविष्णुः कुकुर्कुं नमगथगना इहर्न समक वृका रजवाकनका न समय ४ नार्दयानसुना ना
मवाधिसत्वा इहवन् ॥ नदाभनस्यगथगनयनन ॐ दृजमवला किर्न ज्वनसमनदुया ४ समाधिविजुहामयाद
ष्ट ॥ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वामहासत्त्ववजागर्ननामसमाधिसमायद ॥ नदावनाकिर्न ज्वनस्यवाधिसत्त्वमहास
त्त्वविकिप्रितनामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वामहासत्त्वचन्द्रवत्राचर्ननामसमाधिसमायद ॥ द
नदावनाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्व ४ सूर्यवत्राचर्ननामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वामहासत्त्वविकु
लितनामसमाधिसमायद ४ नदावलाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ गगनगजा नामसमाधिसमायद ४ यदास

(१५)

मनरुद्धावाधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ ज्वाकात्रकननामसमाधिसमायद ४ नदावनाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्वमहास
त्त्ववजायुज्वनामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वमहासत्त्व ॐ तुनाजनामसमाधिसमा
यद ४ नदावनाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्वमहासत्त्व ४ मागत्रगकिर्ननामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धा
वाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ सिरुविद्वलीनामसमाधिसमायद ४ नदावनाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ सि
रुविक्रीदिर्ननामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वामहासत्त्ववत्राचर्ननामसमाधिसमायद ४ नदा
वनाकिर्न ज्वनवाधिसत्त्वमहासत्त्व जविविसत्त्ववननामसमाधिसमायद ४ यदासमनरुद्धावाधिसत्त्वामहा

सत्त्वः सर्वत्रास विनाध्य द्युदयति ॥ तदा वना किं न्ध प्रवाधिसत्त्वामहासत्त्व सर्वत्रास विनाध्य द्युदयति ॥ यदा सम
नरुन्धो वाधिसत्त्वसुमनदवाचन ॥ साधुसावना किं न्ध प्रयत्नय ॥ दृष्टयुगितानि ॥ नृथ कुक्कुचुन्यसुथजगत्सुम
नदवाचन ॥ जल्पं स्वया कुन्युगवना किं न्ध प्रयत्नय गितानि नन्द ॥ यादृजमवना किं न्ध प्रयत्नय गितानि नान ॥ ५६
नादृजमवना किं न्ध प्रयत्नय गितानि नान ॥ ५७ दृष्टयुगितानि नान ॥ ५८ दृष्टयुगितानि नान ॥ ५९ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६० दृष्टयुगितानि नान ॥ ६१ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६२ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६३ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६४ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६५ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६६ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६७ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६८ दृष्टयुगितानि नान ॥ ६९ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७० दृष्टयुगितानि नान ॥ ७१ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७२ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७३ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७४ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७५ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७६ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७७ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७८ दृष्टयुगितानि नान ॥ ७९ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८० दृष्टयुगितानि नान ॥ ८१ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८२ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८३ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८४ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८५ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८६ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८७ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८८ दृष्टयुगितानि नान ॥ ८९ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९० दृष्टयुगितानि नान ॥ ९१ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९२ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९३ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९४ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९५ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९६ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९७ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९८ दृष्टयुगितानि नान ॥ ९९ दृष्टयुगितानि नान ॥ १०० दृष्टयुगितानि नान ॥

युर्वकानिकजन्मविवनानिनसविदने ४थयत्रदात्रजसनयजकाजत्रमिकर्मदिका ४यमागायतिव्यानका ४सु
यहवकासुथाजगसागिकाद्वष्टिरुत्रुवित्रात्यादका ४रुद्रसानायायत्रगानाःसलानाकदयिकानहुयहम
हाजानसुत्रननराज ४सर्वयाययनिभाकनकन ४ने ॥ अथसर्वदिवत्रनविद्वक्तिरजवगमनकदाचतु ॥ कथ
जानामहजवत् ॥ काजसुयहमहाजानसुत्रननराजसर्वयाययनिभाकनकन ४रजवानाहजलिकज
युसुमत्र ४यवनेनाजसुदन्दिनयाहसफलि ४समकवृद्धमत्रनिर्मल्लोकिथयनिकयिनी ४नोदिसयायिक
ल्यनीयथायाहुत्रवस्तुनित्रसत्रजकुति ४सयायनागिनिवदुनय ४यथानिजवस्तुयाहुत्रमनूजकुति। सधर्म

[illegible]

ननु यद्दमसा जानसु वनन नार्जुनः ॥ त्वया यनन वसं सावित्र्यं ॥ नयूनन विजानि ॥ उ नाम न वल विषय
ति ॥ न न ००० हयय विषय या एत ॥ प्रिय सं पुथा उमन ल विषय ॥ उ मिष्य सि ल क न य र स र्वा व मि ल क धा नु ज
मि ना ल स्य ग थ ग न स्य स का अ ध र्म म न्त्र अ ध र्म ॥ न व क न य र ग न वान् स र्वा ना स र्वा म न ल विषय सि ॥ न थ व ल
कि न्त्र व न र ग व न् ॥ या दौ जि न सा मि व द्वा का न क यु का न ॥ न थ स र्वा वि व न वि क मि ल क र्वा व न य व ल ग
न व द्वा ना य का ग न्ध व न्त्र स न ग न्त्र कि न्त्र न म द्वा न म न्त्र य का ना ॥ य द न्त्र यु का ना स द्वा य का ना न न्द्रा ए म
व न म न द्वा र ग ॥ द्वा य नु म र ग व ना ल्मा क सि ष्या न्त्र म र्ज ॥ न व ना ल्मा ॥ य र्दि व उ य स म्भ द्वा ल व मि क्ति ॥

मेयथमगत्रं गत्वा नामावासर्यवलाकयी गयी ४ अवनाकयित्वा हिन्दू नामावासर्य ४ ५५ दमलदं गानानावासर्य नच
 गगुनानावासर्य दम्भिनि सौविद्य ४ ५६ उवात्रयुमावनसविद्य ४ यत्रिष्ठुद्यतिरुद्रु नानावासर्य मरुति ५७ यस्म्यदात्रवा
 हिन्दू ५८ ॥ एजवानाद ॥ ५९ ॥ यत्र न हिन्दू ५९ ॥ यस्म्यदात्रिय ४ ६० चक्रुः किरुथको गयी ॥ नचो गत्रा किरुथको गयी किरु
 दना हिन्दू वा ६१ यत्र न हिन्दू नानावासर्य नच गयी ६२ यत्रा किरुथको गयी नच ६३ सनद्वयका ४ ६४ यत्रा न हिन्दू ५९ ॥ सित
 वगादकि ५९ ॥ यत्रा सध ५९ ॥ यत्रा सानदा गयी ॥ ६५ ॥ यत्रा किरुथको गयी ४ ६६ नच गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥ न
 च गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥ यत्रा किरुथको गयी ५९ ॥

नियार विद्या नि ॥ एज वा नाह ॥ नय वर्ष जन मयि य नि निवृत्त ॥ ४ ॥ नय जन मय ॥ ५ ॥ द कि नि यार वि
द्या नि ॥ य वि सा प्र गृह स रू धा न यि य नि ॥ ६ ॥ नय जन मय ॥ ७ ॥ य नि वृत्त नय वि य नि ॥ ८ ॥ के सा धि क वर वि ठ व
गि का म रू मि म्वा य ध न क स य ना स न म स स त्रि लो ज्य न य नि लो ज्य न सा धि क उ य वा न उ ज्जी न य म्वा र्व क ल
व नि ॥ क र्म रू न वि यार्क ॥ य सा धि क उ य वा न रू म्वा र्व क न य नि ॥ ९ ॥ नय जन मय ॥ १० ॥ स रू मि म्वा
या हि ना जा य न ॥ य सा धि क उ य वा न उ ज्जी न य म्वा र्व क र्व नि ॥ ११ ॥ नय जन मय ॥ १२ ॥ स रू मि म्वा
का द क पा हि न जा य न ॥ य सा धि क न क का द स स त्रि लो ज्य न य नि लो ज्य न ॥ १३ ॥ क र्म स क न य व र्ज य

[illegible]

यद्वापि नानिधायि नानि ॥ न सत्यत्रि लोहानि हि क्व वा नयत्रि लो कर्वा ॥ साधिकं वक्तुं न शिख दय मां सा
 धिकं वक्तुं विषाय मं ॥ साधिकं वक्तुं य मं ॥ साधिकं वक्तुं न प्राय मं ॥ विषय युक्ति का न ॥ क न स क न ॥ न
 क साधिक स्य मु न ॥ यु नि का न ॥ क मु स क न ॥ ॥ अथ यथा नाना रण व न म न द वा व न ॥ अथ यथा
 निले ग व न ना णि यथा यु दा हि रि क् वा ध य म ॥ ॥ यथा कि मा क स म य स म य ना हि ल व नि ॥ वि ने या हि स व
 र व नि ॥ का ग म हि स य र व नि ॥ अथ यथा क स ज र व नि ॥ ना नि र व र ग व न ॥ अथ यथा य ना नि र व नि ॥ अथ यथा
 ना न र व न ॥ अथ यथा य ना नि र व नि ॥ अथ यथा य ना नि र व नि ॥ अथ यथा य ना नि र व नि ॥ अथ यथा य ना नि र व नि ॥

श्रीमद्भगवद्गीता
156

